International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 10 Issue – 2 July-December 2022
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

शेखावाटी प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थलो का भौगोलिक वितरण

सोनिका गुर्जर
शोध छात्रा, भुगोल विभाग
सिंघानियां विश्वविद्यालय, पंचेरी बड़ी, झुन्झुनूं
डॉ. मुकेश कुमार शर्मा
सह आचार्य , भुगोल विभाग
सिंघानियां विश्वविद्यालय, पंचेरी बड़ी, झुन्झुनूं

परिचय

शेखावाटी प्रदेश गौरवपूर्ण इतिहास व परम्पराओं की वह वीर भूमि है, जहां की राजपूतानी आन और शौर्य की कीर्ति विश्व में बेजोड़ है। पहाड़ पहाड़ियों पर निर्मित दुर्लभ दुर्गों, प्रसादों व विस्तृत मरूभूमि आदि अप्रकृति आदि के प्रकृत के विभिन्न रूपों में श्रृंगारित यह राजघरानों की भूमि यदि पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है तो क्या? देश–विदेश के विभिन्न भागों से आने वाले असंख्य प्रदेश की सुरम्यता व चिंताकर्षण पर्यटन स्थलों का परिचायक है। इस प्रदेश की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परम्परायें, जन जीवन, प्राकृतिक वातावरण सभी अपने में अनूठी विविधता लाये हुए हैं।

भारत में ही नहीं अपितु विश्व भर में शायद ही भित्ति चित्रों का इतना समृद्ध क्षेत्र हो जितना कि राजस्थान में स्थित शेखावाटी के इलाके में है। प्रारम्भ में यह स्थान दूर तक दिखाई देने वाला एक अर्द्ध–मरूस्थल ही रहा है। यहाँ कोई चित्रकला से संबंधित संस्थान ही नहीं था। शनैः–शनैः इतिहास और परिस्थितियों ने करवट बदली और यह मरूभूमि रंगीन भित्ति चित्रों के बसंत से दूर दूर तक खिल उठी। लगभग दो शताब्दियों तक भित्ति चित्रकारों ने इस पर अपने जौहर आजमाए। इस कला के कलाकारों ने सन् 1750ई. से लेकर 1930 तक निरन्तर इस क्षेत्र को समृद्ध किया। आमतौर पर इसको राजस्थान का ओपन एअर थिएटर कहा जाता है।

शेखावाटी का मध्यभाग दोनों ओर से दिल्ली जयपुर तथा जयपुर बीकानेर राष्ट्रीय राजमार्गों से जुड़ा हुआ है। सीकर और झुंझुनूं जिलों से जुड़ा हुआ यह एक अद्भुत इलाका है। सीकर तो जयपुर के उत्तर में मनुष्य के हाथों की अंजलि जैसा दिखाई देता है, जबकि झुंझुनूं का उत्तरी इलाका चूरू जिले को स्पर्श करता है। चूरू राजस्थान राज्य का एक जिला है। अधिकतर भित्ति कृतियाँ शेखावाटी के उत्तर और पश्चिम के कस्बों और गाँवों में बहुत सम्पन्न तरीके से बनाई गई है। इन दर्शनीय स्थानों पर दिल्ली, जयपुर और बीकानेर से बड़ी सुगमता से पहुँचा जा सकता है।

भौगोलिक स्थिति

राजस्थान राज्य के तीन प्रमुख धरातलीय विभाजनों में पूर्वी राजस्थान में राजस्थान बांगर प्रदेश उनमें से एक है, और शेखावाटी प्रदेश जिसमें से एक प्रमुख उप–विभाग है। जिसे बांगर प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

यह अध्ययन क्षेत्र $26^{0}26'$ उत्तरी अक्षांश और $74^{0}44'$ से $76^{0}34'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। इस प्रदेश में पूर्ण रूप से या विभागीय रूप से तीन जिले आते है। चूरू, झुन्झुनूं, और सीकर। चूरू जिले की (6) छः तहसीलों में से केवल तीन तहसीलें शेखावाटी प्रदेश में आती है (चूरू, तारागढ़ और तारानगर) जबकि झुन्झुनूं जिले में (6) तहसीलें आती है, (बुहाना, चिड़ावा, खेतड़ी, झुन्झुनूं, नवलगढ़ और उदयपुरवाटी) जिसमें बुहाना तहसील का नई तहसील के रूप में अस्तित्व झुन्झुनूं जिले के नक्शे में 2001 में आया है, और सीकर

जिले में पूर्ण रूप से (6) छः तहसीले आती है (दांतारामगढ़, फतेहपुर, लक्ष्मणगढ़, नीमकाथाना सीकर और श्रीमाधोपुर) इस प्रदेश में 23 पंचायत समितियां है। इस प्रकार इस प्रदेश में कुल मिलाकर 15 तहसीलें है। जिसका कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 15,343 वर्ग किलोमीटर है जो राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 5.6 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के संदर्भ में शेखावाटी प्रदेश में जिलों का योगदान देखा जाये तो चूरू जिले का योगदान 29 प्रतिशत है, झुन्झुनूं जिले का योगदान 31 प्रतिशत है और सीकर जिले का योगदान 40 प्रतिशत है। क्षेत्रफल के संदर्भ में इन तहसीलों में चूरू तहसील सबसे बड़ी तहसील है और बुहाना तहसील सबसे छोटी तहसील है। क्षेत्रफल के संदर्भ में जिलों अनुसार सीकर जिला प्रथम स्थान पर आता है। झुन्झुनूं जिला द्वितीय स्थान पर आता है और चूरू जिला तृतीय स्थान पर आता है जिसका योगदान 1683 वर्ग किलोमीटर है।

शेखावाटी प्रदेश का मानचित्र

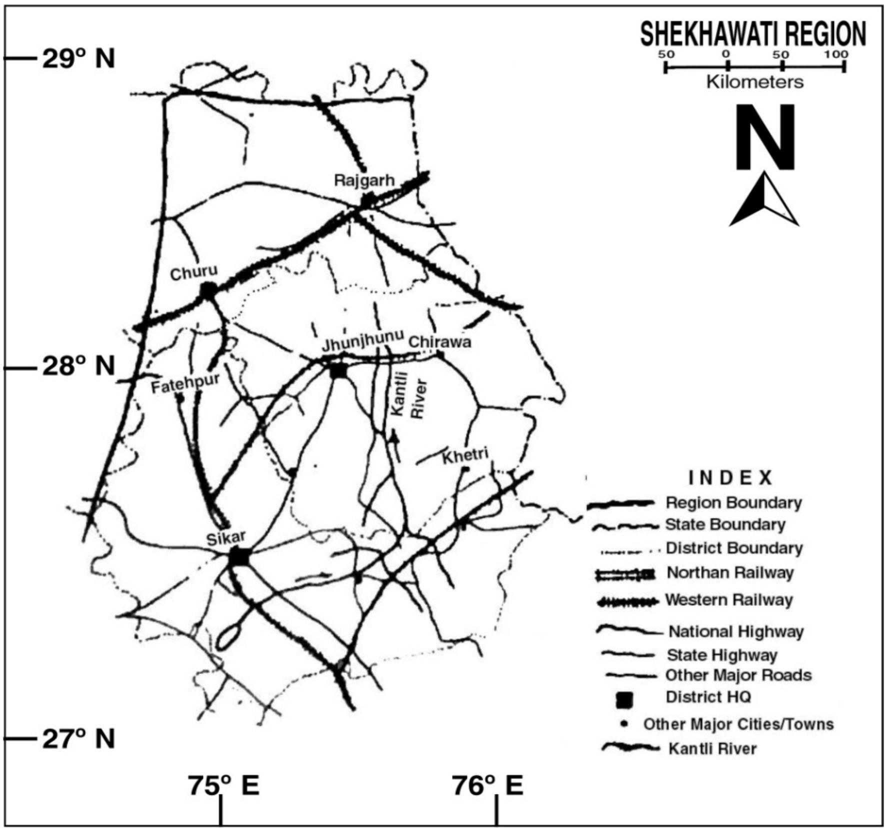

मिश्रा (1967) :– मिश्रा ने राजस्थान राज्य को सात (7) भौगोलिक प्रदेशों में बांटा जिसमें से अर्द्ध शुष्क प्रदेश एक है। और शेखावाटी प्रदेश इस प्रदेश का उत्तरी भाग है। इसके प्रश्चात् प्रो. आर. एल. सिंह (1971) ने राजस्थान राज्य को चार (4) भौगोलिक प्रदेशों में बांटा जिसमें शेखावाटी प्रदेश राजस्थान बांगर प्रदेश के अन्तर्गत आता है। जो पूर्णरूप से या विभागीय रूप से तीन उप विभागों में बांटा हुआ है, जैसे :–

1. B-1 :– यह चूरू प्रदेश का उत्तरी पूर्वी भाग है जो लगभग चूरू जिले के कुल क्षेत्रफल का 20 प्रतिशत है।
2. B-2 :– यह सीकर और झुन्झुनूं प्रदेश का पश्चिमी भाग है जो दोनों जिलों को मिलाकर 70 प्रतिशत बनता है।
3. C-1 :– यह सांभर–डीडवाना प्रदेश है जिसका इस संदर्भ में 10 प्रतिशत योगदान है।

यहां बहुत ही रूचीकर और चौकाने वाली बात प्रस्तुत है कि लेखक के प्रक्षिण ने जिले, तहसील और क्षेत्र के संदर्भ में शेखावाटी प्रदेश का क्षेत्रीय सीमाकंन किया है जो कि कुछ शोधकर्ताओं ने शेखावाटी प्रदेश के नाम पर चूरू जिले के भाग को जो कि 29 प्रतिशत है शेखावाटी प्रदेश के कुल भाग में सम्मिलित नही किया है।

इस प्रदेश की भू–गर्भीय रचना को दो भागों में बांटा गया है जिसमें प्रथम भाग क्षेत्र 85 प्रतिशत है जो बालुका मृदा से ढ़की हुई है। जो लगभग 1 लाख वर्ष पहले की संरचना है जबकि दूसरा भाग का क्षेत्र 15 प्रतिशत है जो दिल्ली तंत्र संरचना के अन्तर्गत आता है जो लगभग 45 लाख वर्षो से पहले की संरचना है जिसकी उन्तपत्ति उच्च केम्ब्रीयन युग की है। अरावली प्रदेश का देहली तंत्र दक्षिण–पश्चिम से उत्तरी–पूर्वी दिशा में है।

राजस्थान के शेखावाटी प्रदेश में प्रमुख धरातलीय संरचना का वितरण प्रस्तुत करते है तो हम पाते हैं कि इसके अन्तर्गत टीब्बे, मैदानी भाग और पहाड़ी और चट्टानी भाग तथा नदीय यहां तक कि जलीय संरचनाये इस संदर्भ में पायी जाती है। उच्चवच के संदर्भ में यह प्रदेश सभी जगह से समान नही है। दक्षिण से उत्तरी दिशा में इसका उच्चवच घटता है यह प्रदेश तीन प्रकार के विभिन्न उच्चावच क्षेत्रों में बंटा है।

1. उच्च अक्षांश क्षेत्र :– 600 से 900 मीटर के मध्य जो शेखावाटी प्रदेश का दक्षिणी भाग आता है जिसमें दो पर्वतीय सीमाये आती है प्रथम लोहागर्ल सीमा (दक्षिणी–पश्चिमी) में और दूसरी बागोर सीमा (झुन्झुनूं जिले की दक्षिणी–पूर्वी सीमा) में इस भाग में प्रदेश का 10 प्रतिशत भाग आता है।
2. मध्यम अक्षांश क्षेत्र :– 300 से 600 मीटर के मध्य आता है जो प्रदेश का अधिकतम भाग है जिसमें मैदानी भाग (लगभग 60 प्रतिशत) फैला हुआ है।
3. निम्न अक्षांश क्षेत्र :– जो लगभग 151 से 300 मीटर की ऊंचाई के मध्य आता है जिसमें टीब्बों का क्षेत्र फैला हुआ है जो प्रदेश के उत्तरी भाग में स्थित है।

शेखावाटी प्रदेश में चार नदियां पायी जाती है जो लोहागर्ल की नदी चन्द्रावती दोहन काटली नदी, ये सभी नदिया उनन्त प्रवाह तंत्र की नदियां है और काटली नदी बेसिन इनमें सबसे लम्बी है जो राज्य के कुल अन्तःप्रवाह तंत्र का 1.4 प्रतिशत क्षेत्र है। प्रमुख रूप से इन नदियों की स्थिति प्रदेश के दक्षिणी भाग में स्थित है। फिर भी इन सभी प्रवाह तंत्रों में काटली प्रवाह तंत्र प्रमुख है जो 4677.80 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है।

सम्पूर्ण प्रदेश में दो प्रकार की मृदाओं का वितरण पाया जाता है। (सेण्डी मृदा और लाल लोमी मृदा) इन मृदाओं के वितरण में भौतिकीय और रासायनिक प्रकृति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। थोर्पे और स्मिथ ने मृदा की उत्पत्ति के आधार पर अन्य प्रकार की मृदा के प्रकार का वर्गीकरण प्रस्तुत किया जिसके संदर्भ में प्रक्षिण करते है तो हम पाते है कि चूरू जिले की तीन तहसीलों में जहां टीब्बे पाये जाते है वहां रिमोसल्स प्रकार की मृदा का वितरण पाया जाता है। चूरू जिले की इन तीन तहसीलों में लाल मृदीय मृदा पायी जाती है, जो अत्यधिक लवणीय प्रकृति की है। नदीय और पहाड़ीय मृदा का वितरण आवास के वितरण के अनुसार पाया जाता है।

इस प्रदेश की जलवायु अपेक्षाकृत कम कठोर कम विषम कम शुष्क एवं कम असहनीय है। इस प्रदेश में औसत ग्रीष्मकालीन तापमान 32^0C से 36^0 C पाया जाता है। जबकि शीतकालीन औसत तापमान 10^0 C से 17^0 C पाया जाता है। किन्तु सामान्य स्थिति में कभी–कभी ही तापमान हिमांक बिन्दु से नीचे पहुचता है यहां शीत ऋतु छोटी किन्तु शुष्क होती है। वर्षा का औसत 20 सेमी से 40 सेमी के बीच होता है। अधिकांशतः हवा पश्चिम से प्रवाहित होती है ग्रीष्म ऋतु में कभी–कभी लू भी चला करती है। धूल के बवण्डर भी आते है। हवा के साथ–साथ उसकी तीर्वता के कारण बालु एक स्थान से उड़कर दूसरे स्थानों पर एकत्रित होती रहती है। इसी कारण बालुका स्तूपों का स्थानान्तरण होता रहता है। धूलभरी आधियाँ इस मौसम में आती रहती है। कभी–कभी काली–पीली आँधी भी आती है, जिनकी आवृति मई एवं जून के महीने में अधिक होती है फिर भी यह प्रदेश जलवायु की दृष्टि से रहने योग्य अपेक्षाकृत अधिक है।

शेखावाटी प्रदेश में वनस्पति यहां के धरातल जलवायु मिट्टीयों एवं चट्टानों के प्रकारों के अनुरूप पायी जाती है। जंहा धरातल पहाड़ी चट्टानी कठोर एवं ढालु पाया जाता है वहां उष्ण कटिबन्धीय कांटेदार वृक्ष पाये जाते है। जहां बलुई मैदानी शुष्क बालुका स्तूपमय धरातल पाया जाता है वहां शुष्कता प्रिय पौधे जैसे कैर, बेर, खेजड़ी, बबूल, जाल, पील्लू, खैर आदि के पेड़ पाये जाते है।

सीकर–झुन्झुनूं एवं चूरू जिलों के मैदानी भागों में घास ''सेवण'' पाया जाता है। जिस पर वहां का पशुधन आश्रित है। शेखावाटी प्रदेश में खनिजों की विपुलता एवं विविधता पायी जाती है किन्तु उनकी गुणवता मात्रा तथा आर्थिक स्वरूप के आधार पर जिप्सम, ताँबा, संगमरमर महत्वपूर्ण खनिज माने जाते है। जिप्सम के जमाव चूरू जिले तारानगर के उत्तर–पूर्व में पाया जाता है ताम्बे के भण्डार झुन्झुनूं जिले के खेतड़ी–सिंघाना क्षेत्र में पहाड़ियों से कोलिहान, खेतड़ी, पपुरना, चान्दमारी, बबाई में पाये जाते है।

सीकर जिले में ओण्डा स्थान से भी संगमरमर पत्थर निकाला जाता है। सीकर में पत्थर चीरने की सैकड़ों मशीने उपलब्ध है तथा हजारों व्यक्तियों को इससे रोजगार प्राप्त होता है। बेरोलियन टोरड़ा बूचरा से चूरला (सीकर) से चीनी मृतिका सीकर से विभिन्न प्रकार रंग रूप एवं सौन्दर्य का ग्रेनाईट उपलब्ध कराता है सीकर से डोलमेनाई निकाला जाता है। सीकर से अभ्रक तथा तामड़ा पत्थर महबा–बागेस्टर (सीकर) से निकाला जाता है। इसके अलावा भी कई अन्य खनिज डोलोमाईट, लौहा (डाबला–सिंघाना–नीमकाथाना) क्षेत्र में पाये जाते है।

शेखावाटी प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थलं

दांतारामगढ

दांतारामगढ़ इसी नाम की तहसील व पंचायत समिति का मुख्यालय है। इसकी स्थिति $27^0 16'$ उत्तरी अक्षांश व $75^0 11'$ पूर्वी देशांतर पर है। वस्तुतः दांता और रामगढ़ दो अलग–अलग गांव है, जिनके बीच से होकर नदी बहती है। यह सीकर से 52किमी. दूर व कोलतार वाली सड़क से जुड़ा हुआ है। इस गांव में बिजली व पानी की सुविधाएं हैं और प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालय भी है। दोनों गांवों की आपसी समीपता के कारण दोनों ही एक–दूसरे की सुविधाओं, जैसे पुलिस स्टेशन, चिकित्सालय, परिवार नियोजन केन्द्र, पशुओं का अस्पताल, आयुर्वेदिक औषधालय, ढाबे व धर्मशाला, मातृ एवं शिशु कल्याण केंद्र, सहकारी समिति, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, सीकर जिले का सेंट्रल को–ओपरेटिव बैंक लिमिटेड, डाक व तार घर, टेलीफोन कार्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालय आदि का उपयोग कर सकते हैं। सरकारी केन्द्रों में तहसील कार्यालय, पंचायत समिति कार्यालय, पी.डब्लू.डी. के निरीक्षक का कार्यालय और राजस्थान विद्युत विभाग का कार्यालय है। रामगढ़ व दांता दोनों ही पुराने गांवों में हकले हैं। दोनों ही गांवों के किले भग्नावशेष अवस्था में है।

फतेहपुर

यह उपखंड तहसील व पंचायत समिति का इसी नाम से मुख्यालय है। इसकी स्थिति $28^0 0'$ उत्तरी अक्षांश व $74^0 58'$ पूर्वी देशांतर में सीकर से 48किमी. उत्तर में है और यह पक्की सड़क द्वारा जिला मुख्यालय से जुड़ा हुआ है। सड़क द्वारा फतेहपुर, जयपुर से 155किमी. दूर है। सड़क के द्वारा ही यह उत्तर व उत्तर–पश्चिम में रामगढ़, रतनगढ़, चूरू, सरदारशहर, सालासर, नोहर–भादरा और बीकानेर से व दक्षिण में लक्ष्मणगढ़ से जुड़ा हुआ है। पश्चिमी रेलवे की सीकर–चूरू मीटर गेज रेलवे लाइन पर फतेहपुर एक रेलवे स्टेशन है। पहले फतेहपुर, सीकर–फतेहपुर रेलमार्ग का अंतिम स्टेशन था। फतेहपुर रेलवे स्टेशन पर एक प्रतीक्षालय कक्ष व एक छोटा प्रतीक्षालय हॉल है व एक चाय की दुकान है। सीकर से फतेहपुर व फतेहपुर से बीकानेर नियमित बस सेवा उपलब्ध है। स्थानीय सवारी के लिए तांगे पाये जाते हैं। शहर का कुल क्षेत्रफल 27.16 वर्ग किमी. है। यहां पर बिजली पानी की लाइनें, डाकघर, दूरभाष केंद्र, तारघर, एक सिनेमा हॉल, एक सार्वजनिक पार्क, नाटक घर, सार्वजनिक पुस्तकालय, एक स्नातक स्तर का महाविद्यालय, एक उच्च माध्यमिक व तीन माध्यमिक स्कूल (दो लड़कों के लिये व एक लड़कियों के लिये), दो मिडिल स्कूल लड़कों के लिये, एक मिडिल स्कूल लड़कियों के लिए, प्राथमिक विद्यालय, एक संस्कृत महाविद्यालय तथा पिछड़ी जातियों के लिए गांधी छात्रावास के नाम से एक सहायता प्राप्त छात्रावास है। यहां पर कई अच्छी धर्मशालाएं है तथा शहर में एक पुलिस स्टेशन, एक पुलिस चौकी, एक उप कारागार, एक स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर की शाखा, सीकर जिला केन्द्रीय को–ओपरेटिव बैंक लिमिटेड, दो ऐलोपैथिक चिकित्सालय, एक पशु चिकित्सालय, एक गौशाला, दो आयुर्वेदिक औषधालय, एक शहरी परिवार नियोजन केन्द्र, एक मातृ एवं शिशु कल्याण केन्द्र है। स्थानीय समस्याओं तथा सफाई आदि की देख–रेख के लिए नगरपालिका है। यहां पर कुछ ढाबे व जलपान गृह है जहां पर लोग खाना खा सकते हैं।

सरकारी कार्यालयों में जो यहां पर स्थित है, उप जिला मजिस्ट्रेट, तहसीलदार, विकास अधिकारी, मुंसिफ मजिस्ट्रेट, पुलिस सर्किल अधिकारी, नगरपालिका, भेड़ व ऊन प्रसार केन्द्र, माप–तोल निरीक्षक, सहायक जेलर, सहायक अभियंता, सार्वजनिक निर्माण विभाग (अकाल), पोस्टमास्टर व सहायक स्टेशन मास्टर (पश्चिमी रेलवे) आदि के कार्यालय हैं तथा राजस्थान बाल सेवा सदन नामक एक अनाथालय भी है।

फतेहपुर के किले के बारे में कहा जाता है कि इसकी स्थापना फतेह खां नामक नवाब ने की थी। किला अब खंडहर स्थिति में है और इसमें कई मीनारें हैं। इस किले में पुराने नवाब दौलत खां का एक मकबरा व एक बावड़ी है। पुराने किले के एकदम समीप एक पुराना श्री लक्ष्मीनाथ जी का मंदिर और एक दिगंबर जैन मंदिर है। इस शहर में पीर हाजी निजामुद्दीन चिश्ती की दरगाह भी है। यह एक धार्मिक स्थान है जहां पर वार्षिक उर्स का मेला होता है। इसके अलावा शहर में कई पुराने और महत्वपूर्ण मंदिर है जिनमें

जगन्नाथ जी का, सत्यनारायण जी का व जैन मंदिर प्रमुख है। शहर के दूसरी अस्पताल भवन, चमड़िया महाविद्यालय व उद्यान, सरस्वती पुस्तकालय व आजाद भवन पुस्तकालय, पिंजरापोल गोशाला, इमरतीनाथ जी का आश्रम, शिल्प शाला, गीता भवन व सारनाथ मंदिर है।

शहर में कई मारवाड़ी उद्योगपतियों के बड़े–बड़े भवन हैं। ये भवन कुछ को छोड़कर एक ही प्रकार के हैं, देखने में मजबूत और विशालकाय हैं और शहर के काफी बड़े भाग में बने हुए हैं। इन भवनों के भव्य प्रवेश द्वार जो गलियों की ओर खुलते हैं, ऊंची मेहराबों तथा पीतल के काम वाले लकड़ी के नक्काशीदार दोहरा कपाटों वाले हैं। भवनों की बाहरी दीवारों पर रंग–बिरंगी तस्वीरें (मुख्य रूप से धार्मिक) हैं जिनमें घरेलू जानवरों के चित्र होते हैं। इन भवनों के मालिक जो कि उद्योगपति हैं, देश के सुदूर प्रान्तों में रहते हैं। अतः वर्ष के अधिकांष भाग में ये विशाल व आकर्षक भवन खाली रहते हैं और केवल शादियों और धार्मिक समारोहों पर लोग यहां रहते हैं।

यहां का मुख्य उद्योग बंधेज की छपाई का है। यहां के रंगे हुए कपड़े विदेशों को निर्यात किये जाते हैं। यहां का प्रसिद्ध चूर्ण व चटनी, आयुर्वेदिक दवाईयां, अगरबत्तियां, पान मसाला व मोमबत्तियां भी दूसरी जगह निर्यात की जाती है।

पर्वतीय स्थल हर्ष

सीकर से लगभग 14किमी. की दूरी पर स्थित हर्ष रमणीक पर्वतीय स्थल है। आबू पर्वत के बाद इसी हर्ष पर्वत को हिल स्टेशन कहा जा सकता है। जिसकी ऊंचाई लगभग तीन हजार फीट है। पर्वत की तलहटी में हर्ष नाम का एक छोटा सा गांव बसा हुआ है, जो प्राचीन समय में हर्ष नगरी के रूप में विख्यात था। त्रिपुर नाम के राक्षस का विनाश करने के लिए भगवान शिव ने यही अवतार लिया था और वे हर्षनाथ कहलाये। यह भगवान शिव के चौहानकालीन भव्य मंदिर के कारण कला जगत् में सुप्रसिद्ध है। गांव से पर्वत के शिखर पर जाने के लिए लगभग 10किमी. की सर्पाकार पक्की सड़क बनी हुई है। चोटी पर पहुंचने के बाद अद्भुत आनंद की अनुभूति होती है। यहां से दूर–दूर के गांव एवं पहाड़ों के विहंगम दृश्य बड़े सुहावने नजर आते हैं। वर्षा के दिनों में तो यह रम्य पर्वत स्वर्ग का रूप धारण कर लेता है। पर्यटन की दृष्टि से यह एक समृद्ध स्थल है, जहां नैसर्गिक सौंदर्य एवं प्राचीन कला एवं संस्कृति का अनूठा संगम है।

अजमेर के चौहान शासक विग्रहराज ने वि.स. 1013 में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारंभ किया जो उनके उत्तराधिकारी के समय में वि.स. 1030 में पूर्ण हुआ। कहते हैं कि महादेव के इस प्रमुख मंदिर के चारों तरफ विभिन्न देवी–देवताओं के 84 छोटे–छोटे मंदिर थे। प्राचीन मंदिर के निकट एक नया शिव मंदिर भी है, जिसका निर्माण सीकर के संस्थापक राव राजा शिव सिंह ने अपने शासनकाल में (वि.स. 1778 से 1805) सीकर नगर की बसावट के समय करवाया था। यह भव्य शिखरयुक्त मंदिर है। मंदिर में गर्भगृह में विशाल एवं भव्य सफेद मकराना का शिवलिंग है, जिसके ऊपर तांबे की झलेरी लटकी हुई है, जिससे पानी की बूंदे

टप–टप लिंग पर गिरती रहती है। दक्षिण दिशा में एक आले में पार्वती जी की प्रतिमा विराजमान है। इस मंदिर में विशाल सभा मंडप है तथा आसमान को छूता हुआ भव्य एवं कलात्मक शिखर वास्तव में अद्वितीय है।

प्रसिद्ध है कि चुरू जिले के धांधू ग्राम के दो भाई–बहिन यहां आए थे। भाई का नाम हर्ष और बहन का नाम जीण था। अपनी भाभी से किसी बात पर नाराज होकर जीण सदा के लिए घर त्याग कर यहीं समीप के रलावता ग्राम के पहाड़ों में आ गई। उसे मनाने के लिए उसका भाई हर्ष भी आया। जब जीण घर चलने के लिए राजी नहीं हुई तो हर्ष भी घर नहीं लौटा और इसी पर्वत पर भगवान शिव की आराधना तथा तपस्या में लीन हो गया। कालान्तर में वह भैंरू के नाम से लोकदेवता के रूप में पूजा जाने लगा। जीण ने भी पहाड़ों में कठिन तपस्या की और वहां पूर्व में पूजित जयंती माता में विलीन हो गई, जो कालान्तर में जीण माता के नाम से जानी गई। वह स्थानवर्तमान में जीण माता के नाम से प्रसिद्ध हो गया। हर्ष जीण शेखावाटी के लोकमानस के आराध्य हैं।

हर्ष नामक भैंरू का भी यही पर स्थान होने से इस स्थल की गरिमा और भी बढ़ गई है, क्योंकि यह इस क्षेत्र में लोकदेवता के रूप में पूजे जाते हैं। कई जातियां यहां जात और जडूलों के लिए तीर्थ यात्रियों के रूप में बारह महीने आती रहती है। इन मंदिरों की पूजा पीढ़ी दर पीढ़ी ब्राह्मण पुजारियों द्वारा नियमित रूप से की जाती है। हर रविवार के दिन बहुत भीड़ रहती है। वर्षा ऋतु में हर्ष पर्वत की प्राकृतिक छटा ही निराली होती है, तब स्थानीय लोग तथा यात्री यहां पिकनिक मनाने अवश्य आते हैं। शेखावाटी का यह एकमात्र पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) है, जो पर्यटन की दृष्टि से हर तरह से उपयुक्त है।

कहा जाता है कि 1969ईसवी में खान महान बहादुर द्वारा औरंगजेब के निर्देश पर जानबूझकर इस पूरे क्षेत्र में (जयपुर और जोधपुर राज्यों में) मंदिरों को नष्ट किया गया। इस पहाड़ी का नाम हर्ष एक पौराणिक घटना के कारण पड़ा है। यह वह स्थान है जहां पर राक्षसों (जिन्होंने स्वर्ग से इंद्र व अन्य देवताओं को बाहर निकाल दिया था) को मारकर शिव ने देवताओं से प्रशंसा पाई थी। प्रशंसा से हर्ष (खुशी) की भी अभिव्यक्ति होती है। अतः इस स्थान का नाम हर्ष पड़ा।

खंडेला

खंडेला इसी नाम से जानी जाने वाली पंचायत समिति का मुख्यालय व नगर है। यह $27^0 36'$ उत्तरी अक्षांश व $75^0 30'$ पूर्वी देशांतर पर बसा हुआ है। यह डामर की सड़क द्वारा जिला मुख्यालय से 50किमी. दूर और जयपुर से 87किमी. दूर है। नीमकाथाना उप जिला मुख्यालय व श्रीमाधोपुर तहसील मुख्यालय यहां से क्रमशः 40 और 20किमी. सड़क के द्वारा दूर हैं। यहां का सबसे पास का रेल्वे स्टेशन कांवट है, जो खंडेला से 15किमी. दूर है। खंडेला एक म्यूनिसिपल नगर है जिसका क्षेत्रफल 1.52वर्ग किमी. है। शहर में बिजली, नल का पानी, डाकघर, तारघर, चार धर्मशालाएं, एक सिनेमा हॉल, एक पुस्तकालय, एक माध्यमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय लड़कों के लिए व एक उच्च प्राथमिक विद्यालय लड़कियों के लिए तथा प्राथमिक पाठशालाएं, बैंक ऑफ बड़ौदा की शाखा, एक सार्वजनिक उद्यान, एक गोशाला तथा एक पुलिस स्टेशन है। शहर में पंचायत समिति का कार्यालय, एक वन विभाग की चौकी, एक भेड़ व ऊन प्रसार केंद्र, एक एलोपैथिक चिकित्सालय, एक प्रत्यालक (एन्टिरैबिक) केन्द्र, एक पशु चिकित्सालय तथा राजस्थान विद्युत मंडल और जल विभाग के उप केन्द्र (सब स्टेषन) हैं। शहर में कई छोटे तालाब व बावड़ियां है। छोटे–छोटे सोते व नाले जो नगर के अंदर से निकलते हैं, वर्षा ऋतु में नदी का रूप धारण कर लेते हैं।

इस नगर का एक लंबा इतिहास है। यहां पर कई मंदिर हैं, मुख्यतः जैन मंदिर, गोपीनाथ मंदिर और खड़गेश्वर मंदिर। खंडेला खंडेलवाल वैश्यों और खंडेलवाल ब्राह्मणों का मूल स्थान माना जाता है। यहां पर एक मस्जिद भी है तथा शहर में एक पुराने किले के खंडहर है। खंडेला पपीता, फल व लकड़ी के खिलौने के लिए प्रसिद्ध है तथा छोटे उद्योग के रूप में यहां गोटा बनाने का कार्य भी होता है।

लक्ष्मणगढ़

यह इसी नाम की तहसील व पंचायत समिति का मुख्यालय है। इसकी स्थिति सीकर के उत्तर में $27^0 49'$ उत्तरी अक्षांश व $75^0 2'$ पूर्वी देशांतर पर सीकर से 27किमी. और फतेहपुर (जो इस परगने अर्थात् उपमंडल का मुख्यालय है) से 25किमी. दूर है। इसका कुल क्षेत्रफल 0.65वर्ग किमी. है। यह सीकर व फतेहपुर से सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है जहां पर नियमित बसें चलती है। लक्ष्मणगढ़ सड़क से ही नवलगढ़ और सालासर से भी जुड़ा हुआ है। यह पश्चिमी रेलवे में सीकर चूरू लाइन पर एक रेलवे स्टेशन है। रेलवे स्टेशन पर एक छोटा प्रतीक्षालय कक्ष तथा एक प्रतीक्षालय कमरा है जहां बिजली की सुविधा उपलब्ध है।

लक्ष्मणगढ़ में एक नगरपालिका, एक पुलिस स्टेशन, एक पुलिस चौकी, एक महाविद्यालय (कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय), प्राथमिक शालाएं, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय लड़कों का व एक लड़कियों का,

एक माध्यमिक व दो उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक संस्कृत महाविद्यालय, एक सार्वजनिक पुस्तकालय व वाचनालय, एक चिकित्सालय, एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, एक परिवार नियोजन केंद्र, दो आयुर्वेदिक औषधालय, एक पशुओं का अस्पताल तथा एक स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर की शाखा है। शहर में बिजली है तथा अपनी स्वयं की जल प्रदाय व्यवस्था है। शहर में डाकघर, तारघर, एक दूरभाष केंद्र, एक सिनेमा हॉल, एक सार्वजनिक उद्यान तथा स्थानीय परिवहन के लिए घोड़े से चलने वाले तांगे हैं। बाहर से आने वालों के ठहरने के लिए कई धर्मशालाएं हैं। यहां पर तहसील कार्यालय, भेड़ व ऊन प्रसार केंद्र, पंचायत समिति, सहायक अभियंता, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल व जलदाय विभाग तथा सहायक स्टेशन मास्टर के कार्यालय हैं।

लक्ष्मणगढ़ अपने गढ़ (दुर्ग) के कारण प्रसिद्ध है जो विशाल चट्टानों के ऊपर बना हुआ है। किला नीचे से काफी प्रभावशाली व भव्य नजर आता है। इस गढ़ में छोटे आवासीय स्थान व एक परनी का तालाब है। शहर में कई हिन्दू मंदिर व मुस्लिम मस्जिदें है तथा मंदिरों में मुरलीमनोहर का मंदिर अधिक प्रसिद्ध है। यहां के मुख्य उत्पादनों में गोटा, सीमेंट की वस्तुएं व चमड़े के जूते हैं। इनके अतिरिक्त लकड़ी के खिलौने व छपे हुए कपड़े लक्ष्मणगढ़ से बाहर भेजे जाते हैं। लक्ष्मणगढ़ में अच्छी शिक्षण संस्थाएं है जैसे बगड़िया बाल विद्या निकेतन तथा एक सुव्यवस्थित उच्च माध्यमिक विद्यालय है।

नीमकाथाना

यह इसी नाम का उपखंड, तहसील व पंचायत समिति का मुख्यालय है। इसकी स्थिति $27^0 44'$ उत्तरी अक्षांश व $75^0 47'$ पूर्वी देशांतर पर सीकर के उत्तर–पूर्व में है। नीमकाथाना नगरपालिका वाला नगर है। इसका क्षेत्रफल 0.42वर्ग किमी. है। सड़क के द्वारा शाहपुरा के रास्ते से होते हुए जयपुर से 120किमी. दूर है। यह सीधी सड़क के द्वारा रींगस से होते हुए भी जयपुर से 120किमी. दूर है। नीमकाथाना से जयपुर के बीच नियमित बसें चलती है। सड़क के द्वारा ही यह पाटन, खेतड़ी व रींगस से भी श्रीमाधोपुर होते हुए जुड़ा है। नीमकाथाना पश्चिमी रेलवे में फुलेरा–रेवाड़ी लाइन पर एक रेलवे स्टेशन है। रेलवे स्टेशन पर बिजली उपलब्ध है व एक प्रतीक्षालय हाल है। परिवहन के लिए मोटर टैक्सी व तांगे दोनों ही उपलब्ध है।

नगर में बिजली तथा अपनी स्वयं की जलदाय व्यवस्था है। डाक, तार व दूरभाष सुविधायें भी है। नगर में एक सरकारी स्नातक स्तर का महाविद्यालय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय व प्राथमिक विद्यालय, एक सार्वजनिक पुस्तकालय, एक संस्कृत विद्यालय (प्रवेशिका स्तर तक), एक अनुसूचित जनजाति का छात्रावास (जो समाज कल्याण विभाग द्वारा चलाया जाता है) और एक पिछड़ी जाति के लिए अनुदान प्राप्त छात्रावास है। यहां स्थित सरकारी कार्यालयों में उपखंड अधिकारी (परगना अधिकारी) का कार्यालय, तहसीलदार, विकास अधिकारी, नगरपालिका, पुलिस के सर्किल अधिकारी, वन विभाग, उप कारागृह, आबकारी निरीक्षक, भेड़ व ऊन प्रसार केंद्र, सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहायक इंजीनियर तथा पश्चिमी रेलवे के सहायक स्टेशन मास्टर के कार्यालय है। नगर में एक पुलिस स्टेशन, एक क्लब, एक चिकित्सालय, एक प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, एक परिवार नियोजन केंद्र, एक मातृ एवं शिशु कल्याण केंद्र, दो औषधालय, एक प्रत्यालर्क केंद्र (जो प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से जुड़ा हुआ है), एक सिनेमा हॉल, धर्मशाला, एक सार्वजनिक पुस्तकालय व वाचनालय, पशु चिकित्सालय व एक सार्वजनिक उद्यान है। बैंकिंग सुविधाओं में स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर की शाखा, सीकर डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल को–ओपरेटिव (सहकारी) बैंक लि. तथा राजस्थान बैंक की शाखा है। शहर का कूड़ा–कचरा उठाने का कार्य नगरपालिका द्वारा देखा जाता है। सार्वजनिक निर्माण विभाग (पी.डब्ल्यू.डी.) के डाक बंगले में तीन कमरे हैं, जो बिजली व पानी की सुविधाओं से संपन्न है।

शहर में कई मंदिर व मस्जिदें है। श्री नृसिंह जी का मंदिर, दूसरे मंदिरों की तुलना में अधिक प्रसिद्ध है। प्रतिवर्ष नीमकाथाना में एक पशु मेला लगता है जहां पर प्रसिद्ध हरियाणवी नस्ल के पशु लाये व बेचे जाते हैं।

नीमकाथाना से 10किमी. सड़क की दूरी पर एक धार्मिक स्थान हैं जो गणेश्वर के नाम से जाना जाता है जो कि गर्म पानी के सोते के लिए प्रसिद्ध है। यह गर्म पानी एक गोमुख से निकलता है व कुंड में गिरता है। इस सोते का गर्म पानी पवित्र माना जाता है। यहां पर प्रवेशिका स्तर का एक संस्कृत विद्यालय व एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है। नीमकाथाना से 20किमी. दूर पाटन है। वहां पर बादलगढ़ नामक एक किला है। पहाड़ी के ढाल पर माणक कुंड नामक एक तालाब है और बालेश्वर जी का मंदिर है। पाटन का क्षेत्रफल 4709 एकड़ व जनसंख्या 3091 है। यहां पर प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय, एक चिकित्सालय, एक पुलिस स्टेशन व अन्य सार्वजनिक सुविधाएं हैं।

पिपराली

यह सीकर तहसील का एक गांव है और इसी नाम से पंचायत समिति का मुख्यालय है। यह जिले के मुख्यालय सीकर से सड़क द्वारा 10किमी. दूर है। सीकर और पिपराली के मध्य नियमित बसें चलती है। पिपराली से दांतारामगढ़ सड़क द्वारा 24किमी. दूर है। इसकी स्थिति 27^{0}39′ उत्तरी अक्षांश तथा 75^{0}15′ पूर्वी देशांतर पर है और यहां पर तारघर, डाकघर, प्राथमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय, एक स्वास्थ्य केंद्र, एक एलोपैथिक औषधालय, एक आयुर्वेदिक औषधालय, पशु चिकित्सालय व एक सार्वजनिक उद्यान है। गांव में बिजली है और पानी पम्पों के द्वारा कुओं से निकाला जाता है। गांव में पंचायत समिति पिपराली का कार्यालय और एक सहकारी समिति भी है।

रघुनाथगढ़

यह सीकर तहसील का एक गांव है तो 27^{0}40′ उत्तरी अक्षांश और 75^{0}21′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह सीकर से सड़क द्वारा जुड़ा हुआ है जहां नियमित बसें चलती है। यह सीकर से 24 किमी. दूर है। सबसे पास का रेलवे स्टेशन भी सीकर है। यहां पर एक प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय, एक स्वास्थ्य केंद्र, एक ऐलोपैथिक औषधालय, परिवार नियोजन केंद्र, डाकघर, दूरभाष केंद्र, एक पुलिस स्टेशन, एक धर्मशाला आदि सार्वजनिक सुविधाएं हैं। एक सहकारी समिति भी है। पानी कुओं से प्राप्त किया जाता है। रघुनाथगढ़ अपने प्राचीन ऐतिहासिक किले के कारण प्रसिद्ध है जो अब खंडहर अवस्था में है। यह किला प्रसिद्ध अरावली की पहाड़ी पर स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि इस स्थान पर चंदेल राजपूतों का शासन था। यहां पर रघुनाथ जी के दो मंदिर हैं। एक मिले में तथा दूसरा गांव में। यहां एक पुराना महादेव का मंदिर है जो कहा जाता है कि 12वीं शताब्दी में बना था। यहां पर महिषासुर मर्दिनी (हिंदुओं की एक देवी) की संगमरमर की मूर्ति है। एक दूसरा स्थान अलका जी के कुंड के नाम से जाना जाता है। रघुनाथगढ़ पहाड़ी के दूसरी ओर लोहार्गल घाटी (झुंझुनूं जिले में) है। यहां से मकान बनाने हेतु पत्थर खानों से निकाला जाता है और आस–पास के क्षेत्रों में भेजा जाता है। वर्षा ऋतु के समय रघुनाथगढ़ पहाड़ी से पानी, पहाड़ी रास्ते से होते हुए मैदानों को जाता है।

रामगढ़ शेखावाटी

रामगढ़ सीकर जिले के एकदम उत्तर में स्थित है जो 27^{0}46′ उत्तरी अक्षांश व 75^{0}11′ पूर्वी देशांतर पर स्थित है। यह सीकर जिले की फतेहपुर तहसील को इसी नाम से की उप तहसील का मुख्यालय है। जिला मुख्यालय से यह सड़क द्वारा 72किमी. दूर है। तहसील और उप जिला मुख्यालय फतेहपुर से यह 22किमी. दूर है। सड़क द्वारा यह बिसाउ, रूकनसर, पलास, रतनगढ़ और मेघसर से जुड़ा हुआ है। पश्चिमी रेलवे में मीटर गेज सीकर–चूरू लाइन पर यह रेलवे स्टेशन है जहां पर छोटा प्रतीक्षालय कक्ष व प्याउ तथा प्लेटफार्म पर बैठने की बेंचे हैं। रामगढ़ नगरपालिका वाला नगर है जिसका क्षेत्रफल 5.08वर्ग किमी. है।

शहर में दो एलोपैथिक औषधालय, एक प्रत्यालर्क (एन्टिरैबिक) केंद्र, दो आयुर्वेदिक औषधालय, एक महाविद्यालय, एक सार्वजनिक पुस्तकालय, एक लड़कियों का माध्यमिक विद्यालय, दो लड़कों के माध्यमिक विद्यालय, एक लड़कों का उच्च प्राथमिक स्कूल, प्राथमिक स्कूल, एक पुलिस स्टेशन, एक पुलिस चौकी, एक डाक व तारघर, एक दूरभाष केंद्र, एक पशु चिकित्सालय व एक गौशाला है। शहर में बिजली है और अपनी स्वयं की जल व्यवस्था है। यहां पर स्थित दूसरी संस्थाएं है उप–तहसील कार्यालय, राजस्थान राज्य विद्युत मंडल का उपकेन्द्र, जलदाय विभाग, सीकर जिला सेंट्रल को–ओपरेटिव बैंक लि., सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया तथा आर.एन. रूइया महाविद्यालय है। पर्यटकों के लिए कई धर्मशालाएं हैं। शहर में कई मंदिर व मस्जिदें है। मुख्य माने जाने वाले मंदिरों में गंगा बाई, रामदेवरा, राणी सती, कल्याण जी, महादेव और रघुनाथ जी के मंदिर हैं। एक पुराना किला (जो 1790 में सीकर के राव राजा देवीसिंह ने बनवाया था) तथा रामगोपाल पोद्दार की छतरी के कुछ अवशेष यहां पर पाये जाते हैं।

रामगढ स्थानीय रूप से सेठों के नाम से जाना जाता है जिसका अर्थ है धनी व्यापारियों का। नगर की संरचना सीकर के राव राजा देवी सिंह के द्वारा की गई थी। यह नगर अपने अमीर व्यापारियों के बड़े–बड़े मकानों के लिए प्रसिद्ध है। वर्ष के अधिकांश भाग में मकान खाली रहते हैं क्योंकि ये व्यापारी देश के बड़े व्यापारिक केंद्रों में व्यापार करते हैं।

रींगस

यह गांव नीमकाथाना उपखंड (सब डिवीजन) में, श्रीमाधोपुर तहसील में है। यह 27^{0}22′ उत्तरी अक्षांश व 75^{0}34′ पूर्वी देशांतर पर है। जिला मुख्यालय से यह रेल व सड़क दोनों के द्वारा जुड़ा हुआ है। सीकर, रींगस से राष्ट्रीय मार्ग संख्या 11 द्वारा जुड़ा हुआ है और 59किमी. दूर है। नियमित बसें सीकर व रींगस तथा रींगस से जयपुर के बीच चलती हैं। सड़क द्वारा रींगस से जयपुर 61किमी. व श्रीमाधोपुर 11किमी. दूर है।

रींगस से बसें गई मार्गों के लिए मिलती है। मुख्य मार्ग श्रीमाधोपुर, सीकर, जयपुर, दांतारामगढ़, खंडेला, दोराला, बया, अजीतगढ़ और अमरसर की ओर जाते हैं। यहां पर एक रेलवे का विश्राम गृह तथा सार्वजनिक निर्माण विभाग (पी.डब्ल्यू.डी.) का एक डाक बंगला है। डाक बंगले में पानी व बिजली की सुविधाएं हैं। रेलवे का विश्राम गृह, जिसमें तीन कमरे हैं, रेलवे स्टेशन के पास ही है व उसमें पानी व बिजली की सुविधाएं प्राप्त है। रींगस पश्चिमी रेलवे में जयपुर–सीकर और फुलेरा–रेवाड़ी मीटर गेज लाइन पर एक रेलवे जंक्शन भी है। रेलवे जंक्शन पर प्रतीक्षालय कमरे, प्रतीक्षालय हॉल, अमानती सामान घर (क्लोक रूम) और चाय की दुकान है।

इस गांव में पानी, बिजली, डाकघर, एक तारघर, एक दूरभाष केंद्र, एक चिकित्सालय, एक प्रत्यालर्क केंद्र, एक एलोपैथिक औषधालय, एक पशुओं का अस्पताल, एक पुलिस चौकी, एक उच्च माध्यमिक विद्यालय, दो उच्च प्राथमिक विद्यालय लड़कों के लिए, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय लड़कियों के लिए और प्राथमिक पाठशालाएं हैं। यहां पर एक संस्कृत पाठशाला, एक पिछड़ी जातियों के लिए अनुदान प्राप्त नेहरू छात्रावास तथा पंजाब नेशनल बैंक की एक शाखा है। बाहर से आने वालों के लिए धर्मशालाएं है। जिला खादी ग्रामोद्योग का मुख्यालय भी रींगस में है।

यह गांव अपने दो मंदिरों के कारण प्रसिद्ध है जिनके नाम हैं: भवानी जी का मंदिर व गोपीनाथ जी का मंदिर। ऐसा कहा जाता है कि यह मंदिर बहुत पुराना है। प्रतिवर्ष रींगस में एक मेला लगता है जो भैंरो जी के मेले के नाम से जाना जाता है। लोग पूरे जिले में इसे देखने आते हैं।

रैवासा

यह दांतारामगढ़ तहसील में एक छोटा किन्तु महत्वपूर्ण गांव है, जो 27^{0}32′ उत्तरी अक्षांश व 75^{0}13′ पूर्वी देशांतर पर है। जिला मुख्यालय से यह सड़क द्वारा (कहीं कच्ची व कहीं पक्की) 18किमी. दूर है। सीकर व रेवासा के बीच में नियमित बसें चलती है। सबसे नजदीक का रेलवे स्टेशन गोरियां, रैवासा से 2 किमी. दूर है। गांव में एक प्राथमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय व एक डाकघर है। यात्रियों के लिए यहां एक धर्मशाला है। गांव अपने पुराने जैन मंदिरों के कारण प्रसिद्ध है जिनमें से आदिनाथ जैन मंदिर में कई खम्भे व पुराना शिलालेख है। इस शिलालेख की तिथि मार्गशीर्ष शुक्ल 5 संवत् 1661 है। इस मंदिर में किया गया पत्थर का काम अत्यंत दर्शनीय और सराहनीय है। एक दूसरा जैन मंदिर भी है जो नसियां के नाम से जाना जाता है। एक वैष्णव मंदिर है जिसका नाम जानकीनाथ का मंदिर है। इस मंदिर में छतों पर प्राचीन चित्रकारी है व बनावट में यह काफी बड़ा व मजबूत है। एक दूसरा वैष्णव मंदिर श्री कल्याण जी का है जहां पर चंदेल राजपूतों ने राज्य किया था। कुछ दिनों पूर्व एक नमक उत्पादन की परियोजना रेवासा में शुरू की गई है।

जीण माता

यहां पर एक देवी जीण माता का मंदिर है जो गोरिया रेलवे स्टेशन से लगभग 12किमी. दूर है। यह रेवासा गांव से दक्षिण में 10किमी. दूर तथा सीकर जिला मुख्यालय से 29किमी. दूर है। यह सीकर से डामर की सड़क (13 किमी.) तथा पक्की सड़क (16किमी.) द्वारा जुड़ा हुआ है। नियमित बसें (दिन में दो बार) सीकर और जीणमाता की ओर चलती है। मंदिर से सबसे नजदीक कोछोर गांव 6किमी. है।

जीण माता हिंदुओं का एक प्राचीन धार्मिक स्थान है। यह स्थान न केवल जिले में बल्कि आस–पास के क्षेत्रों में भी प्रसिद्ध है। दूर–दूर से लोग यहां जोड़े से आते हैं और पूजा करते हैं। बच्चों के मुंडन संस्कार के लिए भी जीणमाता को मानने लोग वहां आते हैं। यहां का एक रिवाज जटा चढ़ाना इस क्षेत्र में प्रचलन में है। चैत्र और आसोज महीने में यहां मेले भरते हैं। यात्रियों के लिए यहां कई धर्मशालाएं व तिबारे हैं। मेले के दिनों में पका हुआ खाना अस्थायी दुकानों पर मिलता है। बर्तन व दूसरी आवश्यक वस्तुएं मंदिर के संचालकों द्वारा प्रदान की जाती है। जीण माता मंदिर के संचालन के लिए एक कमेटी नियुक्त की हुई है। फिर भी मंदिर में चढ़ाई गई वस्तुएं वंशानुगत पुजारी जो यहां रहते हैं, लेते हैं। मेले के दिनों में यह स्थान बिजली के जनरेटर द्वारा प्रकाशित किया जाता है और विशेष बसें सीकर–जीण माता के बीच व दांतारामगढ़–जीणमाता के बीच चलती है। यहां पर एक पटवारखाना, उच्च प्राथमिक व प्राथमिक विद्यालय, एक सहकारी समिति व एक डाकघर है। पानी कुओं से लिया जाता है और मंदिर के भीतरी भाग में नल लगे हुए हैं।

यह स्थान देवी जीण माता, जो जयन्ती देवी नाम से भी जानी जाती है, का माना जाता है। जो शिलालेख यहां मंदिर में प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार यह स्थान 10वीं शताब्दी में बना है।

सांवली

यह सीकर से 11किमी. दूर है। यह जिला मुख्यालय से डामर की सड़क द्वारा जुड़ा है। सांवली सीकर ठिकाने के प्राचीन राजाओं के लिए हर्षनाथ की यात्रा के बीच में विश्राम स्थल थ। ऐसा कहा जाता है कि इस स्थान का नाम सावनी नामक एक बावड़ी से लिया गया है। पिछले कुछ वर्षों में यह स्थान काफी महत्वपूर्ण हो गया है। पहले यहां की स्वास्थ्यप्रद जलवायु के कारण यह रहने का अच्छा स्थान माना जाता था। वर्ष 1960 में यहां एक टी.बी. अस्पताल, जिसका नाम श्री कल्याण आरोग्य सदन है, बनवाया गया। दूर–दूर से आये हुए रोगी बिना किसी स्थान, जन्म, जाति, धर्म, पद आदि के भेदभाव के बिना यहां बीमारी के इलाज के लिए भर्ती किए जाते हैं। कल्याण आरोग्य सदन का संचालन व्यापारियों के एक न्यास द्वारा तथा लोक हितेच्छु व्यक्तियों के द्वारा किया जाता है। यहां की जमीन और कुछ भवन सीकर ठिकाने के प्राचीन शासन द्वारा दान किये गये है। यहां पर एक धर्मशाला व तीन विश्राम गृह (निजी) हैं, जो कि कल्याण आरोग्य सदन सीकर द्वारा संचालित है। सांवली में एक बैंक व एक डाकघर की सुविधा है। इसके अतिरिक्त यहां पर एक गोशाला, कृषि फार्म, एक मंदिर, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय (गैर अनुदानित), एक बड़ा उद्यान व एक पुस्तकालय है।

सीकर

यह इसी नाम के जिला, उपखंड (सब डिवीजन) व तहसील का मुख्यालय है, जो $27^{0}37'$ उत्तरी अक्षांश तथा $75^{0}08'$ पूर्वी देशांतर पर, जयपुर के उत्तर में व झुंझुनूं के दक्षिण में स्थित है। यह सड़क द्वारा जयपुर शहर से 108किमी. दूर है। सीकर इस क्षेत्र के मुख्य शहरों के द्वारा चारों ओर से घिरा हुआ है जैसे फतेहपुर, रामगढ़, लक्ष्मणगढ़, पिलानी, चिड़ावा, नवलगढ़, झुंझुनूं, चूरू, चौमू, श्रीमाधोपुर और नीमकाथाना।

यह रेलवे जंक्शन है तथा जयपुर से दक्षिण की ओर से, लोहारू से उत्तर–पूर्व से तथा फतेहपुर से उत्तर–पश्चिम से पश्चिमी रेलवे की मीटर लाइन से जुड़ा हुआ है। यह रेल द्वारा जयपुर से 112किमी. दूर है। रेलवे स्टेशन पर एक प्रतीक्षालय कक्ष, विश्राम गृह, एक अमानती सामान घर, एक भोजन कक्ष, एक किताबों की दुकान व चाय की दुकानें है। स्थानीय यातायात के लिए तांगे उपलब्ध है।

यहां पर सार्वजनिक निर्माण विभाग का एक डाक बंगला है जहां पांच कमरे व बिजली–पानी की सुविधाएं है। शहर में कई निजी होटल व ठहरने के स्थान हैं। इनके अलावा छः बिजली की सुविधा युक्त धर्मशालाएं यात्रियों के ठहरने के लिए है। नागरिकों के लिए शहर में दो सिनेमाघर व तीन नाट्यशालाएं है। शहर में बिजली व सुरक्षित पानी की सुविधा है। स्थानीय मामलों व सफाई व्यवस्था के लिए नगरपालिका है। नगरपालिका कुछ सार्वजनिक उद्यानों की देख–रेख करती है। नागरिकों की अध्ययन–सुविधा के लिए यहां पर एक जिला पुस्तकालय, महावीर पुस्तकालय तथा अन्य तीन पुस्तकालय/वाचनालय है। सीकर में राज्य सरकार की ओर से एक स्नातकोत्तर महाविद्यालय (सहशिक्षाः कला, विज्ञान व वाणिज्य संकाय) है। साथ ही आयुर्वेदिक औषधालय, संस्कृत महाविद्यालय, चार उच्च माध्यमिक विद्यालय, दो लड़कों के माध्यमिक विद्यालय व दो लड़कियों के माध्यमिक विद्यालय, चार उच्च प्राथमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय, एक अनुसूचित जनजाति छात्रावास (जो समाज कल्याण विभाग द्वारा चलाया जाता है) और एक पिछड़ी जाति वालों के लिए सहायता प्राप्त छात्रावास है जिसका नाम कृष्ण छात्रावास है। यहां पर एक औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र है। यहां पर दो ऐलोपैथिक व एक आयुर्वेदिक चिकित्सालय, एक टीबी क्लीनिक, एक प्रत्यालर्क केंद्र, एक पशु चिकित्सालय, एक पशु चल चिकित्सा इकाई, एक ग्राम आधार योजना, दो परिवार नियोजन केंद्र, एक भ्रमणशील नसबन्दी व आई.यू.सी.डी. (अन्तर्गर्भाशय गर्भ निरोधक) इकाई, एक यूनानी दवाखाना, एक मातृ व शिशु कल्याण केंद्र, चार एलोपैथिक औषधालय तथा एक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रयोगशाला है। शहर में डाकघर, तारघर, दूरभाष केंद्र, रेल डाक सेवा, पांच बैंक (स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर, पंजाब नेशनल बैंक, यूनाइटेड कामर्शियल बैंक, सीकर डिस्ट्रिक्ट सेंट्रल को–ओपरेटिव बैंक तथा सीकर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक लिमिटेड), दो पुलिस स्टेशन, दो पुलिस चौकियां, एक उप जेल, गैर कृषि साख समितियां, होटल, ढाबे व ठहरने के स्थान आदि हैं।

शहर में कई मंदिर हैं। इनमें से मुख्य है गोपीनाथ जी का मंदिर, रघुनाथ जी का मंदिर, कल्याण जी का मंदिर, जानकीनाथ जी का मंदिर, बड़ा जैन मंदिर व एक जैन मंदिर जिसे नसियां कहा जाता है। यहां एक दरगाह हिरत शाह वली मोहम्मद चिश्ती की है जहां सालाना उर्स होता है।

जिला, उपखंड (उप प्रभाग, तहसील और जिला परिषद् मुख्यालय होने के कारण यहां कई राज्य व केंद्रीय सरकार के कार्यालय हैं, जिनमें मुख्य जिला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक, उप जिला मजिस्ट्रेट, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, जिला नियोजन अधिकारी, अधिशाषी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग

(भवन व पथ), निरीक्षक विद्यालय, सहकारी समितियों के सहायक पंजीयक, मूल्यांकन संगठन के अन्वेषक, सहायक विशिष्ट सर्वेक्षण एवं खोज उपखंड, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, जिला परिवीक्षिका एवं समाज कल्याण अधिकारी, जिला सांख्यिकी सहायक, सहायक आबकारी अधिकारी, जिला भेड़ एवं ऊन अधिकारी, भेड़ व ऊन प्रसार केंद्र, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के सहायक इंजीनियर (सिटी डिवीजन), अतिरिक्त स्वास्थ्य अधिकारी, जिला आयुर्वेदिक अधिकारी, पंचायत समिति धोद के विकास अधिकारी, जिला परिषद् जिला आपूर्ति अधिकारी, आयकर अधिकारी, अधीक्षक डाकघर, उपखंड अधिकारी दूरभाष निरीक्षक केन्द्रीय आबकारी आदि के कार्यालय हैं।

सीकर शहर की स्थापना वर्ष 1687 में हुई थी। वह जगह जहां अब शहर बसा हुआ है, वीर भान के बास के नाम से जानी जाती थी। सीकर शहर के नामकरण का हालांकि कोई अभिलेख नहीं मिलता फिर भी ऐसा माना जाता है कि यह शब्द शिखर का अपभ्रंश है। कुछ लोगों का मानना है कि यह नाम एक जाट का है जो उस भूमि का मालिक था जिस पर आज सीकर शहर बसा हुआ है। सीकर भी जयपुर की भांति व्यवस्थित रूप से बसा हुआ नगर है। पहले शहर चारों ओर ऊंची चारदीवारों से घिरा हुआ था जिसमें सात दरवाजे थे। वर्तमान में राजस्थान के अन्य शहरों की भांति जनसंख्या की वृद्धि व अन्य शहरी कार्य–कलापों के कारण अब यह चार दीवारी के बाहर भी काफी फैल गया है।

शहर में कई बड़ी इमारते हैं। चार दीवारी वाले क्षेत्र के बीच भूतपूर्व शासक राय राजा की गढ़ी या महल है जिसमें कई बड़े कमरे व कक्ष हैं। यहां एक दूसरी इमारत भी है जो पुराने ठिकाने में माधो निवास कोठी के नाम से जानी जाती थी। इसमें एक दरबार हाल कक्ष है। एक विक्टोरिया मेमोरियल हाल भी है जो अभी कुछ समय पूर्व तक विक्टोरयन साज–सज्जा से सजा था। सीकर संग्रहालय में, जो कि सीकर के पूर्व ठाकुर के संरक्षण में है, कई पुरातत्व की दृष्टि से महत्वपूर्ण कलाकृतियां, जैसे टूटी हुई मूर्तियां आदि है। अन्य सार्वजनिक महत्व की इमारतों में एक बजाज मेमोरियल है जो स्वर्गीय श्री जमना लाल बजाज की स्मृति में बनाई गई इमारत है। यह एक बड़ी इमारत है जिसमें कई कमरे व एक हाल है। इस इमारत की देख–रेख एक न्यास के द्वारा की जाती है। शहर में एक संगीत विद्यालय व शिल्प शाला है।

शहर में दो बड़े तालाब है। इनमें से एक मरू उद्यान के पास स्थित है। वर्षा का पानी इसमें भरता है। इसके पास में राणी सती के मंदिर में मेला भरता है और लोग यहां नहाते हैं। दूसरा तालाब नेहरू उद्यान के पास है, जहां पंपिंग सेट की सहायता से पानी इकट्ठा किया जाता है। शहर के मध्य में एक मीनार बनाई गई है।

सीकर शहर के पास दो स्थान देवगढ़ व कदमों का वास है। देवगढ़ सीकर तहसील में एक छोटा गांव है। जिसकी स्थिति $72^0 33'$ उत्तरी अक्षांश और $75^0 11'$ पूर्वी देशांतर पर है। यह सीकर से सड़क द्वार 13किमी. दूर है। यहां प्राथमिक विद्यालय है। पानी कुओं से लिया जाता है। यहां पहाड़ी के ऊपर एक पुराना किला व कुछ पुराने मंदिर है। किला दो सौ वर्ष पुराना बताया जाता है लेकिन अभी खंडहर अवस्था में है। कदमों का बास गांव भी सीकर तहसील में है तथा इसकी स्थिति $27^0 30'$ उत्तरी अक्षांश व $75^0 08'$ पूर्वी देशांतर पर है। यह जिला मुख्यालय से सड़क द्वारा 14किमी. दूर है। यहां पर एक डाकघर व प्राथमिक विद्यालय है। पानी कुओं से प्राप्त किया जाता है। कदम्ब के वृक्षों एवं तालाब के कारण यह एक पवित्र स्थान माना जाता है। भाद्रपद की अमावस्या को यहां वार्षिक मेला भरता है। देवगढ़ व कदमों का बास सीकर से मोटर की सड़क द्वारा जुड़े हुए हैं तथा नियमित बसें सीकर और इन स्थानों के बीच चलती है।

श्रीमाधोपुर

इसी नाम से पंचायत समिति व तहसील के मुख्यालय के रूप में श्रीमाधोपुर $27^0 28'$ उत्तरी अक्षांश और $75^0 36'$ पूर्वी देशांतर पर सीकर के दक्षिण–पश्चिम में है। यह जिला मुख्यालय से डामर की सड़क द्वारा 65किलोमीटर दूर है। यह सड़क द्वारा जयपुर से 65किमी. व नीमकाथाना से 60किमी. दूर है तथा रेलमार्ग द्वारा रींगस से लगभग 11किमी. दूर है। नियमित बसें श्रीमाधोपुर और सीकर, जयपुर, रींगस व नीमकाथाना के बीच चलती है। श्रीमाधोपुर फुलेरा–रेवाड़ी मार्ग पर (पश्चिमी रेलवे की मीटरगेज लाइन) एक रेलवे स्टेशन भी है। यहां उपलब्ध सुविधाओं में विश्राम गृह व एक प्रतीक्षालय कक्ष है। शहर का क्षेत्रफल 1.01 वर्ग किमी. है।

नगर में नगरपालिका, एक एलोपैथिक औषधालय एवं मातृ व शिशु कल्याण केंद्र, प्रत्यालर्क (एंटिरेबिक) केन्द्र, एक आयुर्वेदिक औषधालय, एक पशु चिकित्सालय, एक प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, एक डाकघर, एक दूरभाष केंद्र, एक तारघर, एक सिनेमा हॉल, एक पुस्तकालय, धर्मशालाएं व एक पुलिस स्टेशन है। नगर में बिजली है और अपनी स्वयं की पानी की व्यवस्था है। नगर में प्राथमिक विद्यालय, एक उच्च प्राथमिक विद्यालय, एक माध्यमिक विद्यालय व एक उच्च माध्यमिक विद्यालय है। यहां पर एक संस्कृत विद्यालय (मिश्रित)

भी है जो प्रवेशिका स्तर का है। बैंक सुविधाएं यहां स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एंड जयपुर की शाखा, सीकर जिला सहकारी भूमि विकास बैंक व सीकर जिला केन्द्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड द्वारा प्रदान की जाती है। यहां शहर में एक वाचनालय है।

तहसील व पंचायत समिति का मुख्यालय होने के कारण श्रीमाधोपुर में कई सरकारी व अर्द्धसरकारी कार्यालय हैं जिसमें मुख्य तहसीलदार, पंचायत समिति, नगरपालिका, आबकारी निरीक्षक, अभियन्ता लघु सिंचाई योजना, निरीक्षक राज्य भंडार व्यवस्था, भेड़ प्रजनन केंद्र, कृषि परियोजना अधिकारी, कनिष्ठ अभियंता, राजस्थान राज्य वृत मंडल, कृषि विभाग का पौध संरक्षण कार्यालय, कनिष्ठ जलदाय विभाग अभियन्ता तथा केन्द्रीय आबकारी निरीक्षक के कार्यालय हैं। इन सहकारी कार्यालयों के अतिरिक्त यहां क्रय–विक्रय सहकारी समिति, सरस्वती उद्योग केंद्र, खादी भंडार व कृषि उपज मंडी समिति का कार्यालय भी है। मुख्य कुटीर उद्योगों में पीतल व निकल के बरतन, सीमेंट की वस्तुएं, कपड़ों की रंगाई, अगरबत्ती बनाना आदि कार्य हैं। शहर से बाहर भेजी जाने वाली वस्तुओं में तिल का तेल, सरसों का तेल व मूंगफली है। शहर में एक स्थानीय बाजार, एक अनाज मंडी व तेल की मिलें है।

नगर में कई मंदिर हैं जिनमें गंगाजी का मंदिर, शिव मंदिर, जैन मंदिर, गोपीनाथ मंदिर, गोविन्द जी का मंदिर, रघुनाथ जी का मंदिर, सीताराम जी का मंदिर व माधो का मंदिर प्रमुख हैं। नगर में एक पुराना तालाब है जो बावड़ी के नाम से जाना जाता है। श्री माधोपुर में नगरपालिका द्वारा प्रतिवर्ष जून महीने में एक पशु मेला आयोजित किया जाता है।

त्रिवेणी

यह एक धार्मिक स्थान है जो श्रीमाधोपुर नगर से 38किमी. दूर है। यह कच्ची सड़क (अजीतगढ़–श्रीमाधोपुर) से जुड़ा हुआ है जहां नियमित रूप से बसें चलती है। दूसरा बस का रास्ता जयपुर–अजीतगढ़ (शाहपुरा होते हुये) है। अजीतगढ़ गांव से त्रिवेणी 9 किमी. दूर है। इस स्थान का नाम त्रिवेणी इसलिये है कि यह तीन छोटी नदियों का संगम स्थल है जो पास की पहाड़ियों से निकलती है और यहां के मंदिरों के आगे से गुजरती है। यहां का मुख्य मंदिर गंगा माता का मंदिर है। प्रत्येक वर्ष चैत्र कृष्णा 2 को यहां एक मेला होता है जहां लोग दूर–दूर के स्थानों से प्रार्थना करने आते हैं। ऐसा कहा जाता है कि जो त्रिवेणी में स्नान करता है वह सारे चर्म रोगों व अन्य रोगों से मुक्त हो जाता है। यात्रियों के ठहरने के लिये धर्मशाला की व्यवस्था है।

लोहर्गल

झुंझुनूं जिले के दक्षिण में जिला मुख्यालय से करीब 60 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित यह पवित्र स्थान सीकर–नीमकाथाना सड़क मार्ग पर सीकर से लगभग 36 किलोमीटर दूर है। इस मार्ग पर गोल्याणा बस स्टैंड से पांच किलोमीटर का पृथक रास्ता लोहार्गल के लिए जाता है। प्रशासनिक दृष्टि से यह नवलगढ़ पंचायत समिति का एक ग्राम पंचायत मुख्यालय है। लगभग 70 मंदिर, मालकेत और बरखंडी शिखर, सूर्यकुंड आदि के साथ–साथ यहां का अनुपम सौंदर्य दर्शनीय है। भाद्रपद मास नर–नारी पद परिक्रमा करते हैं और अमावस्या के दिन सूर्यकुंड में पवित्र स्नान के साथ यह फेरी विधिवत् पूर्ण होती है।

किरोड़ी

जिला मुख्यालय से यह स्थान 55–60 किलोमीटर दूर है। अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा किरोड़ी एक ऐसा रमणीक स्थल है जिसे प्रकृति ने वनस्पति और सौंदर्य संपदा से मालामाल कर रखा है। यहां आम, नींबू, जामुन और बील–पत्र के वृक्षों की तो बहुतायत है ही साथ ही केवड़े के दुर्लभ वृक्ष भी किरोड़ी में उपलब्ध है। ऐतिहासिक दृष्टि से यहां उदयपुरवाटी के दानवीर शासक टोडरमल और उनके वित मंत्री मुनशाह के स्मारक हैं। एक तरफ राधा–कृष्ण का मंदिर है तो दूसरी तरफ पीर बाबा की दरगाह भी है। शीतल और गुनगुने निर्मल जल के तीन कुंड हैं, जिनमें गंधक का मिश्रण बताया जाता है। किरोड़ी तक पहुंचने का रास्ता बड़ा दुर्गम था, किंतु अब सड़क बन जाने से यह समस्या हल हो गई है।

खेतड़ी

प्राचीन शेखावाटी का सबसे बड़ा ठिकाना खेतड़ी भारत की ताम्र नगरी के नाम से जाना जाता है। झुंझुनूं से 70 तथा दिल्ली से 160 किलोमीटर दूरी पर स्थित यह स्थान दिल्ली, जयपुर और झुंझुनूं से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। अरावली के गर्भ में करीब 75 किलोमीटर लंबी ताम्र पट्टी के ऊपरी छोर पर खेतड़ी स्थित है, जहां देश का एकमात्रा तांबा उत्पादक संस्थान हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड है। खेतड़ी नगर जहां तांबा उपक्रम होने के कारण देश के कोने–कोने से आये खननकर्मियों का निवास स्थल है, वहीं खेतड़ी कस्बा अपनी ऐतिहासिक पहचान के कारण दर्शनीय है। खेतड़ी में रामकृष्ण मिशन का मठ, भोपालगढ़ का दुर्ग, पन्नालाल शाह का तालाब, अजीतसागर बांध, बागोर का किला, भटियानी जी का मंदिर, श्री गोपीनाथ मंदिर आदि दर्शनीय स्थल हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला ने खेतड़ी को अपनी बांहों में समेटा हुआ है।

टीबा बसई

खेतड़ी के निकट हरियाणा राज्य की सीमा पर जिले का टीबा–बसई गांव है, जहां बाबा रामेश्वरदास का मंदिर दर्शनीय है। इस मंदिर में अति विशाल मूर्तियां, दीवारों पर अंकित गीता व अन्य धर्म ग्रंथों के पवित्र श्लोक और मंदिर के विशाल परिसर की भव्यता एक अपूर्व झांकी के समान है।

पिलानी

तकनीकी शिक्षा का राष्ट्रीय सिरमौर पिलानी न केवल झुंझुनूं का अपितु पूरे देश का गौरव स्थल है। देश के विभिन्न राज्यों से विद्या अध्ययन के लिये आने वाले छात्र – छात्राओं ने पिलानी में विद्या विहार परिसर को एक लघु भारत का स्वरूप दे दिया है। पिलानी में भारत सरकार का उपक्रम केन्द्रीय इलैक्ट्रॉनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान भी है जो देश के विज्ञान और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। पिलानी का बिरला म्यूजियम एशिया के अग्रणी संग्रहालयों में अपना स्थान रखता है तो बिरला हवेली में बिरला परिवार की ऐतिहासिकता से साक्षात्कार कराने वाला संग्रहालय भी दर्शनीय है। पंचवटी परिसर में मातुराम वर्मा द्वारा बनाई और तराशी गई सजीव मूर्तियां सैलानियों को आकर्षित करती है तो संगमरमर से बना सरस्वती मंदिर भी पर्यटकों के दिल और दिमाग में रच बस जाता है।

महनसर

झुंझुनूं जिले का महनसर कस्बा जयपुर–चूरू रेल मार्ग पर स्थित है। झुंझुनूं से 45किलोमीटर दूर इस कस्बेनुमा गांव में चुरू, झुंझुनूं तथा सीकर जिले के रामगढ़ शेखावाटी से बस द्वारा भी पहुंचा जा सकता है। महनसर में पोद्दारों की सोने की दुकान पर्यटकों के प्रमुख आकर्षण का केन्द्र बनी हुयी है। इस दुकान के भित्ति चित्रों में श्रीराम और श्रीकृष्ण की लीलाओं का नयन प्रिय चित्रण हुआ है। यहां के भित्ति चित्रों का स्वर्णिम पालिश होने के कारण ही यह दुकान सोने की दुकान कहलाती है। महनसर में रघुनाथ जी का मंदिर, तोलाराम मसखरा का आकर्षक भित्ति चित्रों वाला महफिल खाना तथा अन्य हवेलियां भी दर्शनीय हैं।

डूंडलोद

झुंझुनूं से 35 किलोमीटर सीकर की तरफ जयपुर–झुंझुनूं सड़क मार्ग पर डूंडलोद कस्बा दिल्ली और जयपुर से सीधी रेल व बस सेवा से जुड़ा हुआ है। डूंडलोद में किला, गोयनका छतरी आदि दर्शनीय है। मंडावा की तरह यहां भी विदेशी सैलानियों का जमघट लगा रहता है।

मंडावा

शेखावाटी में सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करने वाला झुंझुनूं जिले का मंडावा कस्बा जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर है। झुंझुनूं, मुकुन्दगढ़ और फतेहपुर से जुड़ा होने के कारण यह कस्बा दिल्ली, जयपुर और बीकानेर से भी जुड़ गया है। मंडावा में किला, रेत के धोरे, पारदर्शी शिवलिंग आदि दर्शनीय है।

International Journal of Geology, Agriculture and Environmental Sciences
Volume – 10 Issue – 2 July-December 2022
Website: www.woarjournals.org/IJGAES *ISSN: 2348-0254*

इनके अलावा हवेलियां यहां ऐसी है। जिनके नयनाभिराम, भित्ति चित्रों को देखकर सैलानी मंत्रमुग्ध हो जाते हैं।

नवलगढ

जयपुर–झुंझुनूं सड़क और रेलमार्ग पर झुंझुनूं से 40 तथा सीकर से 30 किलोमीटर की दूरी पर नवलगढ़ कस्बा बसा हुआ है। नवलगढ़ का दुर्ग, रूप निवास पैलेस, आठ हवेली, पोद्दार, भगत, पाटोदिया, चोखानी, सेकसरिया व अन्य परिवारों की हवेलियां, गंगा माता का मंदिर आदि नवलगढ़ के दर्शनीय स्थल हैं।

अनमोल विरासत का धनी झुंझुनूं

शेखावाटी के प्राचीन नगरों में झुंझुनूं का स्थान महत्वपूर्ण है। इसकी प्राचीनता का उल्लेख जैन ग्रन्थों में मिलते हैं। यह बात पूरी तरह ज्ञात नहीं है कि इसकी स्थापना कब हुई लेकिन यह कहा जा सकता है कि जूझा जाट के नाम पर इसकी स्थापना हुई तथा आगे चलकर कालांतर में इसने नगरीय रूप धारण कर लिया।

भाटों और चारणों के अनुसार झुंझुनूं क्षेत्र पर 12वीं शती में जोड़ चौहानों का अधिकार रहा था तथा उस समय इस स्थान को जोड़ी झुंझुनूं कहते थे। इस मान्यता के अनुसार कुछ काल पश्चात् जोड़ यहां से विस्थापित होकर बेरी तारपुरा के आसपास बस गए।

विक्रम की 16वीं शती में कायमखानी नवाबों ने झुंझुनूं पर अधिकार कर लिया। संवत् 1516 में झुंझुनूं नगर में भट्टारक जिनचन्द्र सूरी और मुनि सहस्त्रकीर्ति के शिष्य तिहुणा ने त्रैलोक्य दीपक की प्रतिलिपि करके अपने गुरू जिनचन्द्र को भेंट की। पंचमी व्रत के उद्यापन के उपलक्ष में प्रस्तुत ग्रंथ की प्रतिलिपि कराकर जिनचन्द्र को भेंट किया गया था। इस ग्रंथ की पुष्पिका के अनुसार संवत् 1516 में शम्सखां कायमखानी झुंझुनूं का शासक था। खरतरगच्छीय युग प्रधानाचार्य गुर्वावली में शेखावाटी के नवहा (नुंआ), नरमट (नरहड़) और झुंझुनूं का उल्लेख आता है। इससे 14वीं शती में इसकी उपस्थिति की बात ज्ञात होती है।

इसी क्रम में सिद्धसेन सूरी की सर्वतीर्थमाला का उल्लेख भी समीचीन है। अपभ्रंश कथा ग्रंथ 'विलासवर्दूकहां' वि.सं. 1123 में रचा था। इसमें झुंझुनूं के साथ–साथ खंडिल्ल, नराण, हरसऊद और खट्टउससू (खाटू) के भी नाम आए हैं। इससे इसकी उपस्थिति विक्रम की 12वीं शती में भी ज्ञात होती है।

कायमखानियों ने, जोड़ों ने, निर्वाणों तथा शेखावतों ने झुंझुनूं के भूभागों पर शासन किया। आगे चलकर विक्रम की 18वीं शती के अंत में जयपुर के सवाई जयसिंह ने यह नगर कायमखानियों से छीनकर शेखावतों को ईजारे पर दे दिया। तबसे स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक नगर पर उनका अधिकार रहा।

झुंझुनूं आज एक विकासमान नगर है जिसमें अनेक संस्थान है। नगर में शिक्षा की सम्यक् व्यवस्था है। छात्रों के लिए नगर में सेठ मोतीलाल कॉलेज एवं लड़कियों के लिए साह कॉलेज चलता है। अनेक उच्चतर माध्यमिक एवं प्राथमिक शाला चलती हैं। इनके अतिरिक्त नगर में बीस से अधिक निजी शिक्षण संस्थान चलते हैं। चिकित्सा की अच्छी व्यवस्था नगर में प्राप्त है। सरकारी खेतान अस्पताल तथा अनेक निजी चिकित्सालय हैं। नेत्र चिकित्सालय लोगों की सेवा कर रहे हैं। जल, विद्युत परिवहन की सुविधाएं नगर को प्राप्त हैं।

झुंझुनूं नगर का स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़ा योगदान रहा है। सरदार हरलाल सिंह, नरोत्तमलाल जोशी, दुर्गादत्त कईयां, विद्याधर कुलहरि, ख्यालीराम, ताड़केश्वर शर्मा, चौधरी नेतराम, चौधरी घासीराम की यह नगर कर्मभूमि रहा है।

झुंझुनूं में अनेक मंदिर, मकबरे, तालाब, बावड़ियां, किले और महल निर्मित हैं जिनमें सुन्दर भित्ति चित्र मिलते हैं। नवाबों का नौमहला, अखयगढ़, बादलगढ़, खेतड़ी महल, शम्सतालाब, शेखावतों की छतरियां आज भी खड़ी हुई इस नगर की शोभा में चार चांद लगाती हैं। बड़ी संख्या में पर्यटक इस नगर में प्राचीन कलात्मक धरोहर को निहारने आते हैं।

इस नगर का मंदिर स्थापत्य भी विविध स्वरूपों वाला है। प्राचीन मंदिरों में निरंजनी संप्रदाय का बड़ा रघुनाथ जी का मंदिर है। स्वामी वेंकटेश और गिरिश्रृंखला पर अवस्थित मनसा देवी के मंदिर हैं। इनका स्थापत्य निर्माण शैली के विकासमान स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। नगर की अनेकानेक हवेलियों की स्थापत्य कला भित्तिचित्र मनमोहक है।

यहां संत कमरूद्दीन की सुन्दर एवं उन्नत दरगाह गिरि की गोद में अवस्थित है। शम्सखां एवं उसके भाई के मकबरे स्थापत्य के सुंदर प्रतिनिधि हैं। शेखावतों की छतरियां यहां बड़ी संख्या में अवस्थित हैं। इनके गोलाकार, गुम्बद, कलापूर्ण स्तंभ बरबस ध्यान आकर्षित करते हैं। प्राचीन स्थानों में फोरेस्टर गंज उल्लेखनीय हैं। इसके कुछ स्तंभ आज भी नगर में विद्यमान हैं। बढ़ती हुई लूटपाट और अराजकता को रोकने के लिए कर्नल फोरेस्टर को यहां नियुक्त किया गया था जिसने अनेक लुटेरे सरदारों के गढ़ों को तोड़ डाला था। उसने झुंझुनूं के पूर्वी भाग में एक उपनगर अपनी सेनाओं के लिए बनाया था। इसकी एक मस्जिद और एक मंदिर आज भी अवस्थित है। दोनों में शिलालेख लगे हैं।

बादलगढ़ एक लघु किला है जिसे बिड़ला बंधुओं ने खरीद कर वहां शार्दूल सिंह शेखावत की प्रतिमा स्थापित कर दी है। शार्दूल सिंह के पुत्रों का अधिकार पंचपाना के रूप में झुंझुनूं के विभिन्न भू–भाग पर रहा था।

झुंझुनूं नगर अपनी प्राचीन विरासत को संजोकर विकास के नए पथ पर पूरी गति से अग्रसर हो रहा है। यह नगर अनेक दृष्टियों से राजस्थान का प्रमुख नगर हैं।

इलैक्ट्रॉनिक क्रांति का केंद्र: सीरी

विश्व प्रसिद्ध शिक्षा स्थली पिलानी स्थित इलैक्ट्रोनिक अभियांत्रिकी शोध संस्थान सीरी के वैज्ञानिक अनुसंधानों को देश स्तर पर स्वीकृति मिली है और आज के सुविकसित देश जो वैज्ञानिक अनुसंधान के कारण प्रगति की पंक्ति में अग्रणी है, वहां भी सीरी के अनुसंधानों और कार्यों की पर्याप्त चर्चा है। दूरदर्शन एवं ट्रोपोस्केटर संचार प्रणाली में भी सीरी को गौरव मिला है।

सीरी का शिलान्यास 21 सितंबर 1953 को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया था। सीरी की स्थापना स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद गठित वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् के उस कार्यक्रम के अंतर्गत की गई थी, जिसका उद्देश्य देशभर में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय प्रयोगशालाएं तैयार करना था। सीरी में अनुसंधान और वैज्ञानिक विकास का कार्य सन् 1956 से शुरू हो गया था। इसमें इलैक्ट्रॉन ट्यूशन्स, सालिड स्टेट डिवाइसेस, इलैक्ट्रॉनिक्स इन्स्ट्रूमेंन्ट्स एवं कन्ट्रोल सिस्टम, संचार प्रणाली और ऑडियो इंजिनियरिंग के क्षेत्रों में वैज्ञानिक शोध करके प्रगति की है।

यह शोधशाला अपने प्रयोगों के आधार पर देश की अच्छी प्रयोगशाला है जहां निर्मित अनेक ऐसे उपकरण हैं जो पहली बार देश में तैयार किये गये हैं। इलैक्ट्रोनिक्स एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्रों में सीरी की विशेष उपलब्धियां रही है। सीरी के अनुसंधानों से प्रभावित होकर यूनेस्को ने संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अंतर्गत सन् 1975 में एक प्रोजेक्ट 'विकसित अर्द्धचालक तकनीकी' सीरी को दिया था और उसमें भारत सरकार का वित्तीय सहयोग भी था। इस प्रोजेक्ट के लिए अलग भवन में अल्ट्राक्लीन कैमरे, इंस्ट्रूमेंटेशन जैसी इकाईयां स्थापित की गई।

सीरी में ऐसे उपकरण बताए गए हैं जो वैज्ञानिकों की सूझबूझ के प्रतीक हैं और जिनका श्रेय सीरी की प्रयोगशाला हो ही है। ये उपकरण हैं – सिलिकोन ट्रांजिस्टर्स एवं अनेक पर्तों वाला हाइब्रिड सर्किट आदि।

सिलिकोन ट्रांजिस्टर्स उच्च वोल्टेज के बनाये गये हैं। सीरी की प्रयोगशाला में हाईब्रिड सर्किट भी बनाए जाते हैं जिनका प्रयोग भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा उपग्रह में किया गया है। उपग्रह में सर्किटों का प्रयोग नियंत्रण प्रणालियों और अन्य डिवाइसों में किया गया है। सीरी में टेलीविजन, रिसीवर्स, ऑडियो, इंजीनियरिंग प्रोडक्ट, कंट्रोल सिस्टम एवं उपकरण, अर्द्धचालक डिवाइसेस, माइक्रोवेव ट्यूब्स, पावर ट्यूब्स, डीजल एवं इलेक्ट्रोनिक्स लोकोमोटिव्स की नियंत्रण प्रणालियों तथा राडार में काम आने वाले मेग्नोटोन्स आदि में अनुसंधान किये गये हैं।

डीजल इलैक्ट्रोनिक लोकोमोटिव इंजन की नियंत्रण प्रणाली के निर्माण और परीक्षण सीरी की विभिन्न प्रयोगशालाओं में किए गए हैं। सीरी की प्रयोगशाला में लगी पूंजी के आधार पर इस अनुसंधान को देश में मध्यम श्रेणी की राष्ट्रीय प्रयोगषाला का स्तर प्राप्त है किंतु अनुसंधानों की उपलब्धियों को देखा जाए तो यह प्रयोगशाला प्रथम स्तर की कही जा सकती है। सीरी द्वारा नयी दिल्ली एवं मद्रास में भी विस्तार केंद्र स्थापित किए गए हैं और ऐसा वहां के उद्योगों को वैज्ञानिक प्रयोगों से परिचित रखने के लिए किया गया है।

सीरी द्वारा रंगीन दूरदर्शन में भी विकास किया गया है जिसे विगत तीन जुलाई 1982 को दिवंगत प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने भी देखा था और उसके विकसित रूप की सराहना की थी। उपकरणों एवं प्रयोगशालाओं में किए जा रहे अनुसंधानों से संबंधित नमूनों के प्रदर्शन के लिए सीरी संस्थान में एक इकाई का पृथक् से गठन किया गया है।

बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साईंस

बी.आई.टी.एस. (BITS) नाम से देश विख्यात यह संस्थान टेक्नीकल, इलेक्ट्रोनिक, केमिकल एवं सिविल इंजीनियर तैयार करता है और भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान तथा फार्मेसी की उच्च शिक्षा संकाय इस संस्थान की प्रसिद्धि में चार चांद लगाते हैं। बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साईंस की स्थापना सन् 1964 में हुई थी। इसकी पाठ्य व्यवस्था अमेरिका की प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान एम.आई.टी. पर आधारित है। यहां का विज्ञान संग्रहालय भी देखने योग्य है।

बिड़ला तकनीकी म्यूजियम

राजस्थान के झुंझुनूं जिले में एक संस्थान है – बिड़ला इन्स्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साईंस। प्रसिद्ध उद्योगपति जी.डी. बिड़ला द्वारा स्थापित इस संस्थान के परिसर में ही बिड़ला म्यूजियम के नाम से देश का प्रथम उद्योग एवं तकनीकी म्यूजियम है। इस म्यूजियम की स्थापना सन् 1954 में की गई थी। इसके लिये सन् 1964 में भव्य भवन बनाया गया और इस आधुनिक भव्य इमारत में सन् 1970 को केंद्रीय संग्रहालय के रूप में उसे स्थानांतरित किया गया। लगभग 50 हजार फीट क्षेत्रफल में अवस्थित यह संग्रहालय जिज्ञासुओं के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बना हुआ है।

भारत में विश्वविद्यालय कैम्पस में स्थित तकनीकी म्यूजियम का दर्जा केवल बिड़ला म्यूजियम को ही प्राप्त हुआ है। इस भवन को इस प्रकार बनाया गया है कि दर्शक म्यूजियम में प्रवेश करने के बाद आसानी से प्रत्येक दीर्घा के मॉडल और वैज्ञानिक विधि की जानकारी प्राप्त कर सकें।

कोयला खान दीर्घाः– म्यूजियम में कोल माइन्स का प्रदर्शन पूरे एशिया में अकेला माना जाता है। इसमें खान से कोयला निकालने व अन्य खनिज निकालने का तरीका व शोध की विधियां दिखाई देते हैं जो कि अपने आप में रोमांचक अनुभव है।

विद्युत शक्तिः– इस दीर्घा में भाप इंजन, टरबाइन, कोयले से विद्युत उत्पादन, बांध एवं नदी घाटी परियोजनाएं, आण्विक उर्जा प्राप्त करें व इसका सदुपयोग कैसे किया जाए, इसकी पूर्ण जानकारी मिलती है।

खनिज धातुः– इस दीर्घा में यह दिखाया जाता है कि भू गर्भ में छिपे खनिज अयस्क से धातु किस प्रकार प्राप्त की जा सकती है। इसी रूप में लौह अयस्क से लोहा प्राप्त करने व लोहे को इस्पात में परिवर्तित करने की विधि बताई गई है। इसके अलावा यहां एल्यूमिनियम बनाने और विभिन्न प्रकार की मशीनरी का भी प्रदर्शन है।

यातायात (सामान ढुलाई):– सामान ढुलाई के संसाधन के अभाव में मनुष्य की प्रगति संभव नहीं है। सड़क रेलवे, यातायात के विभिन्न साधनों के अलावा इस दीर्घा में समुद्री जहाज के विभिन्न भाग यथा इंजन, यात्रा कक्ष, मनोरंजन एवं सामान रखने की जगह का प्रदर्शन है। इसके अतिरिक्त अन्य यातायात साधनों के विकास को भी दर्शाया गया है।

अंतरिक्ष विजयः– इसमें एक अंधेरी सुरंग बनाई गई है जिसमें सैलानियों को प्रवेश करते ही अंतरिक्ष के समान दृश्य दिखाई देता है। देखने वालों को ऐसा लगता है कि जैसे वो अंतरिक्ष की सैर कर रहे

हैं। उन्हें चंद्रमा व तारे साकार रूप से देखने को मिलते हैं। इस प्रदर्शन में चंद्रमा पर अपोलो यान किस तरह से उतरा तथा भविष्य में लूनर सिटी (चांद–तारों का शहर) के बसावट की कल्पना की गई है।

खान एवं भूगर्भ खननः– इस दीर्घा की खास बात यह है कि इसमें भारत एवं विश्व की महत्वपूर्ण खानों के मॉडल बनाकर प्रदर्शित किये गये हैं। महत्वपूर्ण खनिजों के नमूने व उनकी विस्तृत जानकारी के साथ खानों के नक्शे भी दर्शाये गये हैं।

इलैक्ट्रोनिकी युगः– वैज्ञानिक युग में इन्सान की जीवन शैली में काफी परिवर्तन आया है जिसे यहां प्रदर्शित किया गया है। यहां आदमी की शक्ल में बनाया हुआ एक रोबोट है और माइक्रो प्रोसेसर से नियंत्रित है। यह रोबोट यहां आने वालों का अभिवादन व इलेक्ट्रोनिक दीर्घा का आश्चर्यजनक रूप वृतान्त बताता है। इसके अलावा इसमें कम्प्यूटर पहेलियां और स्लाइड प्रदर्षन एवं संगीत फव्वारा भी बना हुआ है।

रसायन एवं रसायन शास्त्रः– भू गर्भ से निकलने वाले कच्चे तेल एवं गैस की विधियां तथा उन्हें संयंत्र द्वारा संशोधित करने की विधि का इस दीर्घा में वर्णन है। इसमें सीमेन्ट, कागज, रबर, सोडा, कैल्शियम कार्बाइड व दूसरे अन्य महत्वपूर्ण उत्पाद बनाने की विधियों की संपूर्ण प्रक्रिया को नक्शे व चार्टों के माध्यम से दर्शाया गया है।

यूरेका गैलेरी (साइन्स दीर्घा):– साइंस गैलरी में भौतिक विज्ञान के सिद्धान्तों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें यांत्रिक, उष्मा, प्रकाश, ध्वनि, चुम्बकत्व व विद्युत प्रगति की प्रदर्शनियां है। इसके अलावा विज्ञान की अन्य शाखाओं के सिद्धान्त जैसे गणित आदि का प्रदर्शन भी है।

अस्त्र शस्त्रः– इस दीर्घा में पुराने हथियार जो योद्धाओं द्वारा काम में लिये जाते थे, उन्हें प्रदर्शित किया गया है। यहां राजपूताना के परंपरागत अस्त्र–शस्त्रों का प्रदर्शन व पेंटिंग के माध्यम से हल्दीघाटी युद्ध के दृश्य दिखाये गये हैं।

आर्ट गैलरीः– म्यूजियम में आर्ट गैलरी दर्शनीय है। इस दीर्घा में चित्रकला व मूर्तिकला के माध्यम से परंपरागत व आधुनिक पाश्चात्य शैली का प्रभावशाली चित्रांकन है। इसमें सुदूरवर्ती भारतीय चित्रकला व मूर्तियों के बेहतर चित्र बने हुये हैं जिसमें भारतीय भाग के बंगाल स्कूल की पेंटिंग, महत्वपूर्ण मंदिरों व पुराने वस्त्र निर्माण का चित्रण किया गया है।

इसके अलावा बिड़ला म्यूजियम में कृषि, पानी, वन का जीवन में महत्व व आधुनिक कृषि तकनीक, डेयरी, पशुपालन, चीनी, संयंत्र व मशीनी युग का बेहतरीन प्रदर्शन किया गया है।

शेखावाटी के लाइट हाउस

शेखावाटी में शायद ही कोई ऐसा बड़ा गांव–शहर हो जहां पुराने कुएं न हो। वैसे जिले के नवलगढ़, डूण्डलोद, अजीतगढ़, मण्डावा, मुकुन्दगढ़, सूरजगढ़, पिलानी, चिड़ावा, अलसीसर, बिसाउ, महनसर, खेतड़ी, बगड़ एवं झुंझुनूं में आज भी सैंकड़ों की संख्या में पुराने कुएं है। इन कुओं की गहराई 150 से 200 फीट तक है और उनकी ऊंची मीनारें पुराने जमाने की याद ताजा करती है।

जिले में निर्मित कुओं के साथ–साथ कुछ बावड़ियां व तालाब भी बने हुए हैं जिनमें झुंझुनूं स्थित तीन बावड़ियों का जल भी निर्मल है। बावड़ियों पर लोटा, डोर, बर्तन और स्नान की व्यवस्था आज भी बरकरार है।

झुंझुनूं स्थित मेड़तणीजी की बावड़ी भी भव्य और विशाल है। झुंझुनूं के अधिपति शार्दूल सिंह के मरणोपरांत उनकी तीसरी पत्नी बख्त कंवर (मेड़तणीजी) ने उनकी याद कायम रखने के लिए शहर के उत्तर की ओर पीपली चौक और मंशा देवी मंदिर के बीच में संवत् 1840 में इस बावड़ी का निर्माण शुरू किया और वर्षों बाद यह बनकर तैयार हुई।

इस विशाल और भव्य बावड़ी की लंबाई 250फीट, चौड़ाई 55फीट एवं गहराई 100फीट के करीब है। बहुत बड़ा प्रवेश द्वार, दोनों तरफ कमरे, जीना फिर उपर से नीचे पानी के कुंड तक 140सीढ़ियां, एक दीवार से दूसरी दीवार तक 15–20 सीढ़ियों के बाद दो–दो फीट चौड़ी सीढ़ियां बनी हुयी है। करीब 40–50 सीढ़ियां तय करने के बाद एक बड़ा दरवाजा, फिर दूसरा दरवाजा, इनमें जीनें, बालकनियां, छोटे मकान, सामनें की दीवार में सात मंजिला जीना, हर मंजिल में झरोखा फिर पाताल भेदी कुंड। बावड़ी के सामने की दीवार के दूसरी तरफ एक कुआं, जिसके दो कोठे, एक खेल, चोपड़े, ढाणी, दो मीनारें, घड़ोई व सीढ़ीयां और चारों तरफ खुर्रा बना हुआ है। कुएं की नाल से मिली हुई बावड़ी की नाल जिसमें आदमी कुएं से बावड़ी व बावड़ी से कुएं में आ जा सकता है। सातों मंजिलों तक बनावट में यही तरीका अपनाया हुआ है।

झुंझुनूं में ऐसी दो बावड़ियां तुलस्यानों और खेतानों की भी है। परन्तु दो सौ साल पुरानी मेड़तणीजी की बावड़ी की खूबसूरती और सुंदरता अपनी अलग ही पहचान रखती है।

सीकर जिले के फतेहपुर कस्बे में भी एक बावड़ी युग में सन् हिजरी 1024, विक्रम संवत् 1671 में पुराना बस स्टैंड के समीप बनी हुई है। परन्तु अब यह जीर्णावस्था में होने के साथ–साथ मिट्टी एवं कचरे से भी भर गई है। कहा जाता है कि किसी जमाने में चोर चोरी करके इन बावड़ियों में छुप जाया करते थे।

ताम्र संपदा – पुरातन भंडार

राजस्थान में शेखावाटी अंचल अरावली पहाड़ियों, प्रवासी उद्योगपतियों तथा देश की रक्षा में कार्यरत वीरों की मातृभूमि के रूप मे प्रसिद्ध रहा है। इस धरती की यह विडम्बना है कि देश के बड़े से बड़े उद्योगपति की यह मातृभूमि है, पर उद्योग के नाम पर आज भी यहां मिट्टी और रेत का फैलाव है। शेखावाटी अंचल का शायद ही कोई गांव या ढाणी हो, जहां के नौजवान साल–दर–साल भारतीय सशस्त्र सेनाओं में भर्ती होकर देश की सीमाओं पर प्रहरी न रहते आए हों, पर उनके गांव व ढाणियों ने अभी तक उस सामयिक विकास का मुंह नहीं देखा है, जिसके लिए उनके मन में सपने हैं। शेखावाटी को मानवीय अथवा मानव जनित प्रयासों ने भले ही छला हो पर प्रकृति ने वसुंधरा का रूप लेकर शेखावाटी अंचल को गौरव ही प्रदान किया है। शेखावाटी की अरावली पहाड़ियों ने अपने गर्भ में पड़े दुर्लभ खनिज भंडारों को मानव के विकास के लिए समर्पित किया है। खेतड़ी और सिंघाना की पर्वतीय उपत्यकाओं के गर्भ में छिपे तांबे के अनन्त भंडार आज के नहीं वरन् भारत के प्राचीन इतिहास की दुहाई देते हैं।

ढाई हजार वर्ष ईसा पूर्व के ये ताम्र खनिज के भंडार आज के शेखावाटी अंचल के सिरमौर हैं। सम्राट चंद्रगुप्त के शासनकाल में इसी शेखावाटी अंचल में, अरावली की इन्हीं उपत्यकाओं में ताम्र का खनन होता था, ऐसा इतिहासकारों का मत है क्योंकि प्राचीन खनन में प्राप्त भण्डारों के अवशेष और उनमें पाए जाने वाले मौर्य शासनकाल के सिक्के इस तथ्य की साक्षी देते हैं। मौर्यकाल के शासकों ने तांबे के गुणों को पहचानने में देर नहीं की। शायद यही कारण रहा होगा कि ताम्र खनिज का उत्खनन बड़े पैमाने पर देश भर में किया गया क्योंकि लगभग इसी समय बिहार के सिंहभूम जिले में स्थित राखा में भी ताम्र खानों और ताम्र उत्पादन के प्रमाण मिलते हैं। इसके बाद का समय जैसे इतिहास के पन्नों में खो गया। फिर आई मुगल सल्तनत। बादशाह अकबर का ऐश्वर्य। दीन–ए–इलाही के प्रवर्तक जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर, जिसे हिन्दुस्तान मुगल–ए–आजम के नाम से जानता है। उसके नव रत्नों में से एक मियां अबुल फजल ने 'आइना–ए–अकबरी' में राजस्थान के इस भाग का वर्णन करते हुए लिखा है 'अरावली पहाड़ियों के सिलसिले में सिंघाना में तांबे की खान है और यहीं पास में टकसाल भी है। यहां जमीन के अंदर से ताम्बा निकाला जाता है, उस ताम्बे की मिट्टी को गलाकर, पिघलाकर उससे ताम्बे के औजार, जिंसें तथा सिक्के बनाए जाते हैं।' फिर सैंकड़ों सालों तक इतिहास की गुमनामी में सोया शेखावाटी अंचल का यह भू–भाग अंग्रेजों के जमाने के अंतिम काल में सहसा फिर जीवित हो उठा।

अंग्रेज हुकूमत की शह पर अनेक छोटी मोटी कंपनियों ने इस इलाके में ताम्र खनन के लिए छोटे–मोटे प्रयास किए पर वे भी सभी प्रयास इच्छा शक्ति और लगन की कमी के कारण सफल नहीं हो पाए और कामल कवलित हो गये। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, स्वतंत्रता प्राप्त होने के पश्चात् शेखावाटी अंचल में फिर से आंकलन किया गया और 1954 में भारतीय भू–गर्भ सर्वेक्षण संस्थान को सर्वेक्षण के लिए सौंपा गया। चार वर्ष के अथक प्रयासों के पश्चात् जब सिंघाना और खेतड़ी के आसपास की अरावली उपत्यकाओं में ताम्र के विपुल भंडारों का पता लगा तो 1957 में इंडियन ब्यूरो ऑफ माइन्स को आरंभिक खुदाई का काम दिया गया। इसके चार वर्ष बाद शेखावाटी अंचल ने यह प्रमाण दे दिया कि देश की ताम्र की आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में खेतड़ी और सिंघाना अंचल में ताम्र के विपुल भंडार मौजूद हैं और इस छोटी सी ताम्र परियोजना को आगे विकसित करने के लिए पांच वर्षों तक भू–गर्भ में ताम्र खनिज का पता लगाकर अंत में इस योजना को 1967 में सरकारी उद्योग हिंदुस्तान कॉपर लिमिटेड को सौंपा गया। तब से लेकर आज तक सिंघाना और खेतड़ी की कथा ताम्र खनिज विकास की अद्भुत कहानी है।

खेतड़ी कॉपर कॉम्प्लैक्स ने गांवों को गोद लेकर समग्र ग्राम विकास के लिए पेयजल, विद्यालयों का जीर्णोद्धार, फर्नीचर प्रदान करना एवं प्रतिमाह एक गांव में निःशुल्क चिकित्सा शिविर लगाने के साथ ही ग्रामीण महिलाओं को व्यावसायिक प्रशिक्षण के अलावा प्रौढ़ शिक्षण के लिए कक्षाएं भी शुरू की गई हैं। अब इसको गैर–सरकारी संस्थान को देने का प्रस्ताव है।

ताम्र और भारतीय जीवन दर्शन

ताम्र के प्राचीनतम इतिहास को यदि देखा जाए तो हमें मानव को आदिकाल से देखना होगा। जिन चमकती धातुओं को पृथ्वी के गर्भ से निकाला जाता है उनमें तांबे का स्थान निराला है। तांबा अर्थात् ताम्र आदिकाल से मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है। इतिहास को यदि देखें तो हमें प्रस्तर युग

के बाद ताम्र युग का वर्णन मिलता है। प्रस्तर युग के बाद मानव ने ताम्र धातु का उत्खनन एवं निर्माण शुरू किया जिसका उपयोग उसने पहली बार शायद जंगली जानवरों को मारने तथा औजार बनाने में किया। उस युग में भी जिस प्रकार से मानव ताम्र का उत्खनन एवं उत्पादन करता था, वह आज के औद्योगिक युग में एक सुखद आष्चर्य प्रस्तुत करता है।

हमारे देश में ताम्र के प्रति एक पारंपरिक लगाव पाया जाता है। क्योंकि तांबे से बने बर्तन या अन्य ताम्र उपकरण हर भारतीय घर में देखे जा सकते हैं। भारतीय पूजा–अर्चना या धार्मिक अनुष्ठान में तांबे के बर्तनों का इस्तेमाल उल्लेखनीय है। कहा जाता है कि कोई भी आराधना या पूजा सात्विक धातु की संज्ञा दी गई है इसीलिए इसे 'वर्जिन मेटल' भी कहा जाता है। जहां एक ओर ताम्र पूजा–उपासना से जुड़ा हुआ है, वहीं उसके बिना आज के युग में कोई भी संचार माध्यम परिपूर्ण नहीं है। तांबे के निराले गुणों के कारण उसके बिना किसी भी प्रकार का औद्योगिक विकास संभव नहीं। बिजली के उपकरण, बिजली के तार से लेकर केबिल, रेडियो, दूरदर्शन, द्रुतगामी रेलगाड़ियां, यहां तक कि किसी भी विमान के अथवा इलैक्ट्रिक इंजन को खोलकर देखिए तो सहज ही में यह बात समझ में आ जायेगी कि ताम्र न केवल आज के लिए बल्कि आगे आने वाली शताब्दियों के लिए भी मानव के लिए परमावश्यक धातु बनी रहेगी। सैनिक साज–सामान में, बड़ी–बड़ी तापों में, यहां तक कि सेना द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली हर गोली में तांबे का उपयोग होता है। टकसाल से बनने वाले हर चांदी के सिक्के में तांबा मिलाया जाता है और नववधू के श्रृंगार में उपयोग होने वाले सोने के गहनों में एक हिस्सा तांबा ही होता है। स्वर्ण आभूषण में यदि तांबा न मिलाया जाए तो सोने के हार या कड़े में चमक और सख्ती नहीं आ पाएगी। तांबे के बर्तन, तांबे के औजार, तांबे के अन्य उपकरणों पर नक्काशी करने वाले हजारों, लाखों दस्तकारों को ताम्र धातु के कारण ही रोजी–रोटी मिलती है। यदि गौर से देखें तो भारतीय समाज के हर क्षेत्र में एवं अधिकांश सामाजिक और धार्मिक प्रक्रियाओं में ताम्र का उल्लेखनीय योगदान है। तांबे का ताबीज, तांबे का कलश, ताम्र पत्र और तांबे से बनी बिजली के आधुनिक उपकरण तांबे की कहानी कहते हैं।

प्राचीन काल में भारतीय ताम्र

वैसे, ताम्र का खनन एवं दोहन केवल भारत तक ही सीमित था, ऐसी बात नहीं। चीन एवं मिस्र की सभ्यताओं में ताम्र के उत्खनन एवं दोहन के पर्याप्त प्रमाण हैं, परन्तु इस बात के संकेत इतिहासकारों को मिले हैं कि प्राचीन काल में भारतीय ताम्र की मांग विश्व के अन्य बाजारों में अधिक थी। कहते हैं कि मिस्र की जग प्रसिद्ध महारानी क्लीयोपेट्रा को तांबे के गहने पहनने का शौक था। वैसे मिस्र स्वयं ताम्र खनिज के भण्डारों के लिए प्रसिद्ध है, पर इसके भी ऐतिहासिक प्रमाण हैं कि भारत के पूर्वी तट पर प्राचीन बंदरगाह 'ताम्र लिप्ति' से भारतीय ताम्बा जहाजी बेड़ों में मिस्र जाया करता था और चूंकि बिहार के जिले में अवस्थित ताम्र खदानों का इतिहास भी उतना ही पुराना है, इसलिए यह कहा जा सकता है कि यह ताम्बा राखा से मिस्र जाया करता था। इसी काल में राजस्थान की अरावली पहाड़ियों में भी तांबे का उत्खनन हुआ करता था।

ताम्र से जीवन का कायाकल्प

उन्नीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में जब शेखावाटी अंचल में स्थित अरावली पहाड़ियों के गर्भ में से ताम्र खनिज निकालने का काम हिंदुस्तान कॉपर को सौंपा गया, तब यह अंचल वास्तव में उजाड़ और वीरान था। दूर–दूर तक रेत के टीले, मीलों दूर छोटी–छोटी ढाणियों और खूंखार भैंरों की घाटी के अलावा यहां कुछ नहीं था। कहते हैं, भैंरों की घाटी डाकुओं और लुटेरों की घाटी थी, जहां दिन दहाड़े ऊंटों पर आने–जाने वाले व्यापारियों को लूट लिया जाता था। झुंझुनूं, चिड़ावा आदि के व्यापारी गेहूं, बाजरा और दालों के लिए नारनौल की मंडियों में जाते थे, पर लौटते समय भैरों की घाटी पार करने के लिए सब एकजुट होकर चलते। ऊंटों का काफिला शाम ढलने से पहले ही घाटी पार कर लेता। यही बदनाम भैंरों की घाटी के पास आज ताम्रनगरी बसी हुई है। रात को दिल्ली से जयपुर की हवाई उड़ान में नीचे के गहन अंधकार में यह ताम्रनगरी झिलमिलाते सितारे की तरह दिखाई देती है।

आरंभ में जब कोलिहान, खेतड़ी और चांदमारी में खानों की खुदाई का काम शुरू हुआ तो यहां चंद क्वार्टरों और छोटे से कार्यालय भवन के अतिरिक्त कुछ नहीं था। जैसे–जैसे खानों का विकास होने लगा, वैसे–वैसे कल कारखाने लगने लगे। आज एशिया का ताम्र का सबसे बड़ा कारखाना इसी ताम्र नगरी में है।

रामगढ शेखावाटी का नवज्योति पुस्तकालयः–

रामगढ़ का नवज्योति पुस्तकालय राजस्थान के प्रमुख पुस्तकालयों में से एक है। इसकी स्थापना आज से 77 वर्ष पूर्व यहां के कुछ साहित्यप्रेमी नवयुवकों ने भाद्रपद कृष्ण प्रतिपदा वि.सं. 1975 को की थी। प्रारम्भ में

यह पुस्तकालय एक छोटी सी दुकान से चलाया गया। अनेक कठिनाईयों के पश्चात् भी निष्ठावान स्वयंसेवक इसका संचालन करते रहे।

एक छोटी सी दुकान में चल रहे इस पुस्तकालय के लिए भवन का अभाव खलने लगा। रामगढ़ के उदार धनी–मानी व दानी सज्जनों के सहयोग से संस्था का वर्तमान तिमंजिला भवन सन् 1940 में बनकर तैयार हो गया। भवन के अनुरूप ही सुंदर फर्नीचर भी तैयार हुआ। पुस्तकों के लिए विशेष अलमारियों की व्यवस्था की गई। बच्चों के लिए एक अलग वाचनालय कक्ष बनाया गया। संस्था के भवन की भव्यता से प्रभावित होकर राजस्थान सरकार ने अपनी विशिष्ट दर्शनीय स्थलों की प्रदर्शनी (जयपुर) में इस पुस्तकालय का विशाल चित्र रखा।

रामगढ़ संस्कृत के विद्वानों का नगर रहा है। यहां के विद्वानों ने अनेक संस्कृत ग्रंथों की रचना की है। इन पुस्तकों के रखरखाव व संरक्षण के लिए पुस्तकालय में अलग से एक विभाग बनाया गया है जहां ये पुस्तकें सुरक्षित है। इनमें कुछ ऐसे दुर्लभ ग्रंथ है जो भोज पत्रों पर लिखे गये हैं। अनेक शोधकर्ता इन पुस्तकों व ग्रंथों को देखने आते हैं।

लगभग 75 पत्र–पत्रिकाएं नियमित रूप से वाचनालय में आती है। पुस्तकें भारतीय साहित्य के उपयुक्त वर्गीकरण की सर्वाधिक प्रगतिशील व वैज्ञानिक रीति–द्विबिन्दू प्रणाली में वर्गीकृत है।

छात्रों के अध्ययन के लिए पाठ्य पुस्तकों का अभी एक अलग कक्ष बनाया गया है। यह रामगढ़ वेलफेयर ऐसोसिएशन, बम्बई द्वारा संचालित है। इससे प्रतिवर्ष करीब 125 छात्र–छात्राओं को अध्ययनार्थ पुस्तकें दी जाती है।

पुस्तकालय में रोजाना दैनिक हिन्दुस्तान, राजस्थान पत्रिका, दैनिक नवज्योति, इकोनोमिक्स टाइम्स, टाइम्स ऑफ इंडिया, नवभारत टाइम्स व दैनिक आसपास आदि आते हैं। पाठकों की औसत संख्या 150–175 है। पुस्तकें घर ले जाकर पढ़ने वाले सदस्यों की संख्या 50–60 है।

सीकर का श्री महावीर पुस्तकालयः–

सीकर का श्री महावीर पुस्तकालय शेखावाटी के पुराने पुस्तकालयों में से एक है। सन् 1907 में पं. बंशीधर जोशी द्वारा इस पुस्तकालय की स्थापना की गई।

इस शताब्दी के प्रथम दशक में राजस्थान में शिक्षा का प्रसार बहुत कम था। ऐसे समय में समाज को जाग्रत करने के उद्देश्य से जोशी जी ने अपनी समस्त पुस्तकें इस पुस्तकालय को प्रदान की तथा अपने मित्रों से एतदर्थ पुस्तकें प्राप्त करके पुस्तकालय को आरंभ किया। बाबू नवलकिशोर गुप्त ने अपने संग्रह में से दो सौ पुस्तकें देकर सीकर की इस नवोदित संस्था को समृद्ध किया। प्रारंभ में नौ वर्ष तक जोशीजी ने स्वयं आर्थिक सहयोग, श्रम तथा सेवा से इस पुस्तकालय का संचालन किया। जनसामान्य में अध्ययन के प्रति रूचि जगाने के लिये वे स्वयं घर–घर जाकर पाठकों को पढ़ने के लिए पुस्तकें उपलब्ध कराते तथा स्वयं ही उनसे पुस्तकें वापस लाते। वर्षों तक यह क्रम चलता रहा।

सन् 1922 से माधव सेवा समिति ने पुस्तकालय का संचालन संभाला। उस समय जोशी दोनों संस्थाओं के मंत्री थे। 1928ई. में पुस्तकालय की स्वतंत्र कार्यकारिणी बनी।

काफी समय से पुस्तकालय के लिए निजी भवन की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए सीकर के तत्कालीन रावराजा श्री कल्याणसिंह ने भूमि प्रदान की तथा सरकार की ओर से 500रूपये का वार्षिक अनुदान भी प्रदान किया गया। 1936ई. में रतनगढ़ के सेठ चिरंजीलाल नंदलाल बाजोरिया ने पुस्तकालय भवन का निर्माण करवाया। इस भवन के भूमि तल में माधव सेवा समिति औषधालय तथा प्रथम तल में पुस्तकालय चल रहा है। पुस्तकालय के मंत्री पं. हनुमत प्रसाद पुजारी ने 1981ई. में पुस्तकालय भवन में एक नए कक्ष का निर्माण कराया।

1983ई. में भारत के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा प्राप्त विशेष अनुदान से द्वितीय तल पर एक हॉल का निर्माण हुआ है, जिसमें कुछ निर्माण कार्य अभी शेष है।

सम्प्रति पुस्तकालय में विविध विषयों से संबंधित बारह हजार पुस्तकें है। इनमें से लगभग 600 हस्तलिखित पुस्तकें है। तंत्र, मंत्र, काव्य तथा संत साहित्य आदि विभिन्न विषयों से संबद्ध इन हस्तलिखित ग्रंथों में ताड़पत्रीय पुस्तकें भी है। शकसंवत् 1515 में रचित इसकी टीका, श्री भाष्य (सं. 1764 में लिपिकृत) जन दयाल का नासिकेतोपाख्यान (रचना सं. 1734) विश्वनाथ रचित श्रीमद् भागवद् रामचरित्रम् (गद्यकाव्य) नलोदयकाव्यम् संवत् 1748 में लिपिकृत मेघदूत काव्यम् पदमप्रभ सूरि रचित भुवनदीपक (लिपीकाल सं. 1732) सिद्ध नागार्जुन रचित रावण महातंत्र, वाल्मीकि रामायणम् (लिपिकाल सं.1808) बुद्धप्रकाश दर्पण (संगीत) तथा रागरत्नाकर आदि ग्रंथ विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पुस्तकालय की प्रमुख विशेषता इसके वाचनालय में संग्रहित प्राचीन मासिक पत्र–पत्रिकाओं की जिल्दें है। इनमें मॉडर्न रिव्यू (1918 से 1958 तक), कल्याण (1926 से 1995 तक), सरस्वती (1930 से 1967 तक), माधुरी (1923 से 1946), हंस (1932 से 1952), विशाल भारत (1931 से 1946) सुधा, चांद तथा नागरी प्रचारिणी आदि साहित्यिक पत्रिकाओं के अंक सुरक्षित हैं। सेवक, सिद्धान्त, मारवाड़ी समाचार तथा प्रजा सेवक इत्यादि साप्ताहिक पत्रों के प्रथम वर्ष के अंक यहां उपलब्ध है। इसी प्रकार नवराष्ट्र (बम्बई), सैनिक (आगरा) एवं जयपुर समाचार इत्यादि दैनिक समाचार पत्रों के प्रथम प्रकाशन वर्ष के अंक भी यहां पाठकों के लिए सुलभ है। वीर अर्जुन, हिंदुस्तान, लोकमान्य, हिंदुस्तान टाइम्स आदि दैनिक पत्रों के पचास वर्ष पुराने अंकों को सहेज कर पुस्तकालय में सुरक्षित रखा गया है।

सरकार द्वारा इस संस्था को साठ प्रतिशत अनुदान मिल रहा है। राजा राममोहन राय पुस्तकालय ट्रस्ट के अनुदान से ही कुछ नवीन पुस्तकें उपलब्ध हो रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

Acharya, R. 1980. Tourism and Cultural Heritage of India. ii+301 pp. Jaipur (RBSA Publications)

Anonymous, 1997. Ninth Five Year Plan: 1997-2000. Deptt. of Tourism, Govt. of India, New Delhi.

Chouhan, T.S. (1993) Rajasthan Atlas, (In Hindi), Vigyan Prakashan, Jodhpur.

Chouhan, T.S. (1994) Geography of Rajasthan, Vol. 1 and 2, Vigyan Prakashan, Jodhpur.

Cooper, C.P. & Boniface B.G., The Geography of Travel & Tourism; Heinemann Professional Publishing Ltd., Oxford 1987.

Erskine, K.D. 1908 a. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. 104 pp. Gurgaon (Vintage Books). (reprinted 1992).

Erskine, K.D. 1908 b. Rajputana Gazetteers. The Western Rajputana States, Residency & Bikaner. xii+400pp. Gurgaon (Vintage Books). (reprinted 1992).

Gehlot, Jagdish Singh, Rajasthan; Rajasthan Sahitya Mandir, Sojati Gate Jodhpur, 1981.

Jain, Kailash Chand, Ancient Cities and Towns of Rajasthan: Motilal Banarsidas, Delhi Varanasi, Patna.

Mathur, N. and Dodson, R. (ed.) 1994. Tourism: Concepts and Researches. Jodhpur. IJMT Publication, 221pp.

Pal. H. Bishan, The Temples of Rajasthan; Prakash Publishers, Jaipur.

Pearce, D., Tourism Today, A Geographical Analysis, Longman Group, U.K. Ltd. 1987.

Robinson, H., A Geography of Tourism, Macdonals & Evans, London, 1976.

Sharma, K.C. 1996. Tourism: Policy, Planning and Strategy. iii+236pp. Jaipur (Pointer Publishers).

Sharma, M.K.. 2007. Medical Plant Geography, Rachana Publication, Jaipur